अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष- 43, अंक- 04, 1-15 अक्टूबर 2019

'सत्य को मैं जैसा देखता हूं, वही मेरे लिए उसका प्रमाण है। सारी दुनिया उसके विपरीत दिशा में जा रही है। मुझे उसका डर नहीं है क्योंकि जब अंत नजदीक आ जाता है तो पतिंगा दीये के चारों ओर अधिक चक्कर लगाने लगता है। अगर पतिंगे जैसी स्थिति से भारत को न भी बचाया जा सके, तो भी भारत और उसकी मार्फ़त सारी दुनिया को इस नियति से बचा लेने की मेरी कोशिश अंतिम सांस तक चलती रहेगी, यही मेरा धर्म है।'

गांधी 150 जयंती अभियान

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित
अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक
वर्ष : 43, अंक : 04, 01-15 अक्टूबर 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. महात्मा गांधी से कौन डरता है!... 3
3. आइए, सफलता की जगह सेवा की... 5
4. गांधी के व्यक्तित्व का वैभव वर्णनातीत था!... 7
5. प्राण देवता के उपासक से रिक्त हुई... 9
6. गली-गली में ढूंढ़ रहा मैं... 11
7. तलाश गांधी की... 12
8. जब गांधी से मिलने पहुंचे चार्ली चैप्लिन... 13
9. गांधीजी महात्मा क्यों?... 14
10. उपन्यास - 'बा'... 15
11. धाम नदी के दोनों तरफ... 17
12. गतिविधियां एवं समाचार... 18
13. कविताएं... 20

संपादकीय

गांधी-150

हम गांधीजी की 150वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। गांधीजी जिन मूल्यों के लिए जिये, और जिनके लिए जीवन उत्सर्ग किया, वे मूल्य आज फिर रौंदे जा रहे हैं। एक ऐसी जीवन दृष्टि के कारण रौंदे जा रहे हैं जो भारत की आत्मा को भी मार रही है। इसलिए गांधीजी जिन मूल्यों के प्रति समर्पित रहे, उन मूल्यों को बचाने और गहराई से प्रतिष्ठित करने का काम भारत की आत्मा और चेतना को पुनर्प्रतिष्ठित करने का काम है।

सारे धर्मों का मूल मनुष्य मात्र (यहां तक कि जीव मात्र) के प्रति प्रेम को संचारित करना है। इसी कारण जब हम दूसरे धर्म या मतावलंबी के प्रति प्रेम रखते हैं, तो हम कहते हैं कि इसकी प्रेरणा हमें अपने धर्म (मत) से मिलती है। जब हम नफरत करते हैं तो हम अन्य धर्म (मत) को मानने वालों के व्यवहार में खोट बताते हैं। अर्थात् प्रेम ही सर्वधर्म समभाव का आधार हो सकता है। बहुलता वाद का आधार हो सकता है। नफरत बहुलतावाद को नष्ट करने के अभियान का माध्यम बनती है। आज नफरत को राजनीति में लाभ पाने का माध्यम बनाया जा रहा है। इस चुनौती का सामना प्रेम व साधन शुद्धि के माध्यम से करना होगा। इस बुनियाद पर लोक-संगठनों का निर्माण गांव-गांव, मुहल्ले-मुहल्ले में करना होगा। अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर 1906 में बंगाल विभाजन किया था। 2019 में भारत की सरकार ने धर्म के आधार पर कश्मीर का विभाजन किया, वह भी सभी संवैधानिक मर्यादाओं को तोड़कर। धर्म को राजनीतिक पहचान बनाने के खतरनाक खेल के विरुद्ध एक बड़ी लोक चेतना का निर्माण करना ही गांधीजी को याद करने का व्यावहारिक रूप हो सकता है।

एक दूसरी चुनौती जिससे गांधीजी जूझे रहते थे, और जो आज भी उतनी ही विकराल है, वह है लोक समुदायों की अस्मिता को नष्ट करने की प्रक्रिया तथा लोक समुदायों को प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल करने की नीतियां। ये नीतियां एवं प्रक्रियाएं विदेशी औपनिवेशिक शोषणतंत्र व दोहनतंत्र का हिस्सा थीं। औपनिवेशिक राज्य तो खत्म हुआ, किन्तु उसके स्थान पर वैश्विक पूंजी की गुलामी आ गयी जो बहुराष्ट्रीय निगमों के माध्यम से प्रकट हो रही है। लोक समुदायों को पूर्णतः खत्म करने देने का अभियान तेज हो गया है, तथा जीवनयापन के जिन प्राकृतिक स्रोतों से ये हजारों वर्षों से जुड़े थे, उनसे व्यापक स्तर पर ये बेदखल किये जा चुके हैं। लोगों के स्वराज्य के बजाय वैश्विक पूंजी का राज स्थापित किया जा रहा है। गांधी विचारों को जीवित रखना है तो लोगों के स्वराज्य की ओर बढ़ना होगा। गांव के स्तर पर इसका अर्थ ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए रचना का काम तथा संसाधनों के दोहन के विरुद्ध सत्याग्रह का काम आगे बढ़ाना होगा।

औपनिवेशिक काल में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया, जो सूचना एवं प्रसार तंत्र खड़ा हुआ उसका एक लक्ष्य मन और बुद्धि को गुलाम बनाना था तथा ज्ञान को आत्मज्ञान से अलग-थलग करना था। अंतरात्मा की आवाज से च्युत बौद्धिक गुलामी को तोड़े बिना, सच्चा स्वराज्य नहीं आ सकता था। गांधीजी ने सत्य को जानने, उसे ग्रहण करने तथा सत्य को सामाजिक जीवन का आधार बनाने के कई प्रयोग किये। सत्याग्रह और रचना मिश्रित जन-संघर्षों से बौद्धिक गुलामी से मुक्ति की शुरुआत होगी। कारपोरेट जगत, शिक्षा जगत एवं मीडिया का गठजोड़ हमारे सोचने के तरीके पर नियंत्रण करता जा रहा है। गांधीजी को व्यवहार में लाने का एक पहलू यह भी होगा कि जन संघर्षों द्वारा एक नयी ज्ञान पद्धति एवं ज्ञान मीमांसा का निर्माण हो। तभी नये समाज निर्माण के लिए नयी मनुष्य दृष्टि का निर्माण हो सकेगा। नव-चेतना का संचार हो सकेगा।

गांधी जयंती को एक कर्मकांड में तब्दील होने से बचायें। ये असत्य, अन्याय, अनीति एवं असमानता के विरुद्ध आत्मा के विद्रोह का दर्शन है। आत्मा की विद्रोह करने की शक्ति बढ़े, यही गांधी जयंती की सफलता का मापदंड होगा।

–बिमल कुमार

महात्मा गांधी से कौन डरता है!

❑ हरिशंकर परसाई

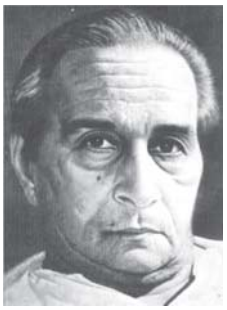

गांधी से कोई नहीं डरता और सब डरते हैं। नाथूराम गोडसे महात्मा गांधी से डरता था। उनसे डर के कारण उनकी हत्या की। महात्मा गांधी किसी से नहीं डरते थे। जिन्होंने गृहमंत्री सरदार पटेल से कहा था कि मेरी प्रार्थना सभा में सादी वर्दी में भी पुलिस नहीं होनी चाहिए। यह इसके बावजूद कहा कि कुछ दिन पहले ही प्रार्थना सभा में बम फोड़ा गया था।

लेकिन महात्मा गांधी से सब डरते हैं। हमारे देश की दो ही मजबूरियां हो गयी थीं—महात्मा गांधी और नेहरू द्वारा प्रचारित समाजवाद। यह मजबूरी इतनी बड़ी हो गयी थी कि दक्षिणपंथी पार्टी भारतीय जनता पार्टी को 1980 में गांधीवादी समाजवाद को अपने कार्यक्रम की तरह अपनाना पड़ा था। कुछ लोग रूस और पूर्वी यूरोप की घटनाओं के बाद यह घोषित करने लगे हैं कि समाजवाद संदर्भहीन हो गया है। समाजवाद एक कपोल कल्पना था। मगर सत्य यह है कि सामाजिक न्याय का संघर्ष सृष्टि के आरंभ से रहा है और सामाजिक न्याय की आकांक्षा भी रही है। इसे कोई भी नाम दिया जाय। इस संघर्ष और आकांक्षा का एक नाम समाजवाद है। सामाजिक न्याय की आकांक्षा और संघर्ष आगे भी जारी रहेंगे। चाहे जो नाम उन्हें दे दिया जाय। इस वास्तविक अर्थ में समाजवाद मरा नहीं है।

मैं कह रहा था कि गांधी जी और समाजवाद इनके विरोधियों की भी मजबूरी हैं। गांधीजी की प्रशंसा भी मजबूरी है। और गांधीजी की निन्दा भी मजबूरी है। गांधीजी के सिद्धांतों को अपनाना भी मजबूरी है। और उन सिद्धांतों का विरोध करना भी मजबूरी है। जो लोग मानवीयता, प्रेम, अहिंसा, दया, मानव जाति की एकता और सबका मंगल ही चाहते हैं, वे गांधीजी के सिद्धांतों को मानते हैं। गांधीजी की प्रेरणा से दुनिया के कई लोग स्वाधीनता, मानवीयता, मानव अधिकार के लिए उनके अहिंसा के तरीके से लड़े और लड़ रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने गांधीजी से प्रेरणा ली, और रंगभेद तथा श्वेत विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध अहिंसा और सत्याग्रह को संघर्ष का तरीका बनाया। अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग ने अश्वेतों की बराबरी के मानव अधिकारों के लिए अहिंसक संघर्ष किया। उन्हें मार डाला गया। उनकी पत्नी कोरेटा ने उनके शव को गांधीजी के चित्र के सामने रखकर कहा, हे गुरु! आपका शिष्य आपकी राह पर चलकर शहीद हो गया।

मगर जैसा मैंने कहा, कुछ लोगों की मजबूरी है, गांधीजी का विरोध करना। ये कौन लोग हैं? वे लोग जो मनुष्य की बराबरी में विश्वास नहीं करते। नस्ल, जाति, रंग, वर्ण, धर्म के कारण अपने को श्रेष्ठ मानते हैं। दूसरे समूहों से घृणा करते हैं। इनका जीवन मूल्य प्रेम नहीं, घृणा होती है। ये हिंसा से अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हैं। इन लोगों के लिए जरूरी है गांधीजी को बार-बार मारना। मगर ये डरते हैं लोगों से, क्योंकि आम जन घृणा और हिंसा के विरोधी होते हैं। शिवसेना के नेता बाल ठाकरे ने, जो अपने को डिक्टेटर कहते हैं, पिछले चुनाव में एक सभा में गोडसे की तारीफ की थी, और गांधीजी की हत्या को देश के लिए अच्छा बताया था। यह भाषण भारतीय जनता पार्टी के मंच से दिया गया था। इसलिए फौरन अटल बिहारी वाजपेयी ने लंबी कैफियत दी। गांधी के प्रति श्रद्धा प्रकट की। उन्हें राष्ट्रपिता बताया और उनकी हत्या की निन्दा की। बाल ठाकरे ने पहले हेकड़ी जताई कि भारतीय जनता पार्टी अगर उनके विचारों से सहमत नहीं हो, तो चुनाव गठबंधन से अलग हो जाये। मगर जब चारों तरफ से उन पर हमले हुए तो उन्होंने भी गांधी की हत्या की निन्दा की। गांधी से सब डरते हैं। सबसे अधिक वे डरते हैं, जो उनके विरोधी हैं।

गांधीजी टॉलस्टॉय को अपना गुरू मानते थे। टॉलस्टाय के निवास में गांधीजी के पत्र सुरक्षित हैं। इन पत्रों के अंत में लिखा है, आपका अत्यन्त आज्ञाकारी शिष्य—मो. क. गांधी। टॉल्स्टॉय का विश्वास हृदय परिवर्तन में था। सत्याग्रह में था। उनकी अपार सहानुभूति गरीब और शोषित किसानों के प्रति थी। अपने उपन्यास 'पुनर्जन्म' में उन्होंने अपना चिन्तन दर्शाया है।

उपन्यास के नायक नेखलदोव का पश्चात्ताप से हृदय परिवर्तन होता है। वह अपनी जमींदारी किसानों को बांट देता है। सादा जीवन जीने लगता है। उसने नौकरानी लड़की से संभोग किया था और उसे भूल गया था। वह लड़की वेश्या हो जाती है। उस पर एक व्यापारी को जहर देकर मारने का आरोप लगता है। जूरी में नेखलदोव भी है। वह लड़की को पहचान लेता है। जेल में वह उससे मिलता है। उसकी सहायता करता है। लड़की को सजा देकर साइबेरिया भेज दिया जाता है। नेखलदोव भी साइबेरिया जाता है और वहां कैदियों के जीवन में सुधार करने का प्रयत्न करता है। वह असफल होकर लौटता है। फिर वह जेल के कैदियों की हालत सुधारने की कोशिश करता है। किसानों की हालत सुधारने की कोशिश करता है। असफल होता है।

टॉल्स्टॉय के नायक व्यक्तिगत प्रयास करते हैं। इसलिए असफल होते हैं। महात्मा गांधी ने इसे जन-आंदोलन का रूप दे दिया। स्वयं टॉल्स्टॉय ने अंतिम वर्षों में महसूस किया था कि इतने साल मैं अगर आंदोलन में लगाता तो किसानों की हालत बेहतर होती। सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलन महात्मा गांधी ने चलाये। कुछ लोगों का कहना है, सविनय अवज्ञा गांधीजी ने अमेरिकी विद्रोही लेखक थोरो के निबंध सिविल डिसओबीडिएंस से सीखा। यह गलत है। स्वयं गांधीजी ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में मैंने जब सत्याग्रह किया तब वह लेख मैंने नहीं पढ़ा था। बाद में पढ़ा था, और उससे मेरे विचारों की पुष्टि हुई।

सत्याग्रह शायद भारतीयों की प्रकृति में है। ध्रुव ने सत्याग्रह ही किया। ऐतिहासिक शोध से मालूम होता है कि अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में भी किसान हफ्ता भर कचहरी या तहसील घेरकर बैठे रहते थे। एक बार एक महीने का बनारस बंद हुआ था। यह बंद इतना पूर्ण था कि मुर्दों को नदी में बहाना पड़ा था। गांधीजी ने इतिहास का सबसे बड़ा अहिंसक जन आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ चलाया।

गांधी के विरोधी कहते हैं कि उन्होंने देश का विभाजन कराया। पाकिस्तान बनवाया।

दस्तावेज हैं कि गांधीजी ने कहा था कि देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा। पर ऐतिहासिक परिस्थितियों, मुस्लिम लीग की हठधर्मिता और ब्रिटिश सरकार की कूटनीति के कारण विभाजन हुआ। गांधीजी धर्म के आधार पर राष्ट्र मानते ही नहीं थे। उन्होंने वाइसराय लार्ड माउंटबेटन से कहा था कि आप देश बांटिये मत। जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दीजिए और आप अंग्रेज चले जाइए। इसका यह मतलब नहीं कि गांधीजी औरंगजेब का शासन ला रहे थे। गांधीजी जानते थे कि जिन्ना भी यह जिम्मेदारी लेने से इनकार कर देंगे। लंदन में माउंटबेटन ने कृष्णमेनन से पूछा कि क्या ऐसी सरकार चल सकेगी? कृष्णमेनन ने कहा—मैं भी सोचता हूं कि ऐसी सरकार नहीं चल सकती, पर वे महात्मा हैं। वे यह ठीक कहते हैं कि आपको भारत छोड़ देना चाहिए।

गांधीजी दंगाग्रस्त नोआखाली चले गये। इससे माउंटबेटन को राहत मिली। गांधीजी का दिल्ली में होना वाइसराय को अड़चन में डालता। माउंटबेटन खुशी में वक्तव्य देने लगे—दि महात्मा इज अवर वन मैन पीस फोर्स। देश का विभाजन गलत था, इतिहास विरोधी था। लार्ड माउंटबेटन ने एक साक्षात्कार में कहा—एक शाम मैं और राजगोपालाचारी बात कर रहे थे। हम इस निर्णय पर पहुंचे कि पाकिस्तान 25 सालों में टूट जायेगा और हमने देखा कि पाकिस्तान 24 साल और कुछ महीनों में ही टूट गया। दो राष्ट्रों का विचार ही गलत था। गांधी जी निराश हुए। लेकिन फिर भी उन्होंने दोनों देशों में सद्भावना बनाये रखने के प्रयत्नों की योजना बनायी। उनकी पाकिस्तान की सद्भावना यात्रा का कार्यक्रम लगभग तय था, पर उनकी हत्या हो गयी।

गांधीजी की विडम्बना थी कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेस को हिन्दू कांग्रेस और गांधीजी को हिन्दू नेता कहती थी और हिन्दू साम्प्रदायिक लोग उन्हें मुसलमानों का पक्षधर कहते थे। जहां तक जिन्ना का सवाल है, वह बीमार आदमी था। शरीर से और दिमाग से भी। कृष्णमेनन ने माउंटबेटन से कहा—आप खुद कहते हैं कि जिन्ना मानसिक रूप से रोगग्रस्त हैं। ऐसा है तो उसकी जगह मानसिक अस्पताल है, राजनैतिक विचार-विमर्श की टेबल नहीं। माउंटबेटन ने कहा - लेकिन वह मुसलमानों का नेता है। कृष्णमेनन ने कहा - उसे मुसलमानों का नेता आपने बनाया है।

एक बात और साफ हो। यह माना जाता रहा है कि पाकिस्तान का विचार शायर मुहम्मद इकबाल का था। लेकिन यह गलत है। खान वली खान ने अपनी किताब 'फैक्ट्स ऑर फैक्ट्स' में भी यह लिखा है। काफी साल पहले मैंने एक लेख पढ़ा था। बम्बई में एक सुशिक्षित तथा काव्य और कला में रुचि रखने वाली महिला बेगम अतैय्या थी। उसकी मित्रता रवीन्द्र नाथ ठाकुर से भी थी और इकबाल से भी। इकबाल ने इस महिला को लंदन से पत्र लिखा कि यह मेरे ऊपर झूठी तोहमत लग रही है कि पाकिस्तान का विचार मेरा है। यह पूरी तरह झूठ है। वास्तव में पाकिस्तान की योजना कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक हसन साहब ने बनायी थी और टोरी पार्टी को दी थी। इतिहास में एक तथ्य देखना चाहिए। जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता संघर्ष लड़ा जा रहा था, तब सब तरह से साम्प्रदायिक संगठन क्या कर रहे थे? जो साम्प्रदायिक संगठन अभी हैं, वे या उनके पितृ संगठन तथा मातृ संगठन क्या इस संघर्ष में शामिल थे? वे नहीं थे। आग्रह करने पर भी वह स्वाधीनता संग्राम की मूल धारा में शामिल नहीं हुए। उन्हें अंग्रेज हुकूमत में रहते हुए अपने लिए विशेष सुभीतों की पड़ी थी और वे एक दूसरे से लड़ रहे थे। वे गांधीजी से नाराज भी थे। जिस ब्रिटिश सरकार से वे विशिष्ट लाभ उठाने की कोशिश कर रहे थे, गांधीजी उस सरकार को हटाने में लगे थे। ये लोग गांधीजी से तब भी डरते थे और अभी भी डरते हैं। आर्य समाज के लोगों ने जरूर स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया।

यह समाज का सुधारवादी आंदोलन था। वह आंदोलन सीमित अर्थों में नवजागरणवादी था। आगे चलकर पुनरुत्थानवादी हो गया। लाला लाजपतराय आर्यसमाजी थे। वे श्रमिक नेता भी थे। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के पहले अधिवेशन का उद्घाटन लाला लाजपत राय ने किया। साइमन कमीशन के विरोध में जुलूस का नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे। पुलिस अफसर सांडर्स के हुकुम से पुलिस ने लाठियां चलायीं और लाला जी घायल हो गये। अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गयी। लालाजी ने कहा था - मुझपर किया गया हर वार ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में ठोंकी गयी एक कील है। बाद में भगत सिंह ने सांडर्स को गोली से मार डाला था। आजादी के बाद ऐसा होने लगा कि वे लोग जो आजादी के संघर्ष से दूर रहे, सबसे ऊंची आवाज में राष्ट्र और राष्ट्रभक्ति को उठाने लगे। इससे भी आगे बढ़कर उन्हें राष्ट्रद्रोही कहने लगे, जिन्होंने राष्ट्र के लिए संघर्ष और बलिदान किये थे।

महात्मा गांधी की संगठन और विराट जन आंदोलन चलाने की क्षमता, विनम्रता, दृढ़ता, तार्किकता, नैतिकता, साहस और निष्ठा से साम्राज्यवादी डरते थे। वायसराय लार्ड वैवल के सचिव ने लिखा है कि जब गांधी के आने की खबर मिलती तो लार्ड वैवल पत्ते की तरह कांपने लगते थे। जनरल वैवल ने दूसरा महायुद्ध लड़ा था। लेकिन सवाल व्यक्ति मोहनदास करमचंद गांधी का नहीं है। 30 जनवरी 1948 को वह व्यक्ति स्तुति और निन्दा से परे कर दिया गया।

अब वह दुबारा क्यों मारा जा रहा है? अब उस आदमी से क्या डर है और किन्हें डर है? वास्तव में डर है, उन सिद्धांतों, मूल्यों, मानवीयता, नैतिकताओं से जो गांधीजी देश को दे गये थे। ये अभी भी जनमानस में बैठे हैं। इन्हें मिटाना ही उद्देश्य है। इन्हें मिटाये बिना संकीर्ण राष्ट्रीयता, अमानवीय व्यवस्था और अपसंस्कृति लायी नहीं जा सकती तथा लोकतंत्र की भावना को मिटाया नहीं जा सकता।

इसलिए महात्मा गांधी का डर है। इसलिए उनकी हत्या को देशहित में उचित बताया जाता है। इतिहास का निर्णय देने का यह तरीका नहीं है। महात्मा गांधी आलोचना से परे नहीं हैं। उनकी आलोचना की जा सकती है, उनकी औद्योगिक नीति की आलोचना उनके जीवन काल में भी हो सकती है, करना चाहिए, पर इतिहास की दृष्टि यह होगी कि वह उस संपूर्ण युग को देखेगा, उन शक्तियों को समझेगा जो सक्रिय थीं, उन मूल्यों को देखेगा जो राष्ट्रीय जीवन के बुनियाद माने गये। इतिहास ऐसे मूल्यांकन करता है। भोंडे तरीके से नहीं। गांधीजी के विचार और मूल्य कितने संदर्भपूर्ण हैं। कुछ लोग उनके मान, मूल्यों, विचारों और सिद्धांतों को उपयोगी मानते हैं। पश्चिम के विचारक गांधीजी पर फिर से विचार कर रहे हैं। अमेरिकी भविष्यवादी लेखक एल्विन टॉफ्लर की किताब 'फ्यूचर शॉक' ने काफी हलचल मचायी थी, उसके बाद की किताब 'थंडरवेव' में एक अध्याय का नाम है 'गांधी विद सेटेलाइट्स'। गगनचुंबी इमारतें, सीमेंट कंक्रीट के जंगल और मशीनी अमानवीयता वाले जीवन से घबराये हुए आदमी को गांधी की याद आयेगी। सादा जीवन, प्रकृति से निकटता और मानवीयता के लिए गांधी की शिक्षा अपनायी जायेगी।

अगस्त, 1991 ❑

आइए, सफलता की जगह सेवा की तस्वीर लगायें!

अल्बर्ट आइंस्टीन के कमरे में महात्मा गांधी की ही तस्वीर क्यों थी?

आइंस्टीन को जब-जब लगा कि विज्ञान और एकतरफा तर्कवाद मानवजाति के लिए संकट बन सकता है, तब-तब उनके सामने गांधी का जीवन एक आदर्श के रूप में सामने आता रहा। शुरुआती दौर में एक वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने दो महान वैज्ञानिकों को ही अपना आदर्श माना था. और ये दो वैज्ञानिक थे- आइज़क न्यूटन और जेम्स मैक्सवेल. उनके कमरे में इन्हीं दो वैज्ञानिकों की पोर्ट्रेट लगी रहती थी। लेकिन अपने सामने दुनिया में तरह-तरह की भयानक हिंसक त्रासदी देखने के बाद आइंस्टीन ने अपने घर में लगे इन दो पोर्ट्रेट के स्थान पर दो नई तस्वीरें टांग दीं. इनमें एक तस्वीर थी महान मानवतावादी अल्बर्ट श्वाइटज़र की और दूसरी थी महात्मा गांधी की. इसे स्पष्ट करते हुए आइंस्टीन ने उस समय कहा था- 'समय आ गया है कि हम सफलता की तस्वीर की जगह सेवा की तस्वीर लगा दें.'

यह भी देखते चलें कि आइंस्टीन के आदर्श श्वाइटज़र स्वयं महात्मा गांधी के बारे में क्या सोचते थे. श्वाइटज़र ने भारत पर केंद्रित अपनी पुस्तक 'इंडियन थॉट एंड इट्स डेवलपमेंट' में लिखा- 'गांधी का जीवन-दर्शन अपने आप में एक संसार है'. उन्होंने आगे लिखा- 'गांधी ने बुद्ध की शुरू की हुई यात्रा को ही जारी रखा है. बुद्ध के संदेश में प्रेम की भावना दुनिया में अलग तरह की आध्यात्मिक परिस्थितियां पैदा करने का लक्ष्य अपने सामने रखती है. लेकिन गांधी तक आते-आते यह प्रेम केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि समस्त सांसारिक परिस्थितियों को बदल डालने का कार्य अपने हाथ में ले लेता है.'

सफलता के स्थान पर सेवा को अपना आदर्श घोषित कर देने वाले आइंस्टीन के जीवन-दर्शन में यह बड़ा बदलाव दिखाता है कि मनुष्य में ज्ञान का विकास रुकता नहीं है. जीवन के अनुभव, सामाजिक वातावरण और वैश्विक परिस्थितियां मनुष्य के विचार को और व्यक्तित्व को बदलती रहती हैं. फिर चाहे वह आइंस्टीन

हों या महात्मा गांधी. ऐतिहासिक शख्सियतों के अध्ययन में हमें इस बात का लगातार ध्यान रखना होता है. और यह बात उन व्यक्तित्वों पर खासतौर पर लागू होती है, जिनका जीवन चिंतनशील और प्रयोगशील होता है. पदार्थ विज्ञान की गुत्थियों को सुलझाते हुए भी आइंस्टीन धर्म, अध्यात्म, प्रकृति और कल्पनाशीलता जैसे विषयों पर लगातार चिंतन करते रहे.

आइंस्टीन महात्मा गांधी से उम्र में केवल 10 साल छोटे थे. वे दोनों व्यक्तिगत रूप से कभी एक-दूसरे से मिले नहीं. लेकिन एक बार आत्मीयतापूर्ण पत्राचार अवश्य हुआ. यह चिट्ठी आइंस्टीन ने 27 सितंबर, 1931 को गांधीजी को भेजी थी. इस चिट्ठी में आइंस्टीन ने लिखा- 'अपने कारनामों से आपने बता दिया है कि हम अपने आदर्शों को हिंसा का सहारा लिए बिना भी हासिल कर सकते हैं. हम हिंसावाद के समर्थकों को भी अहिंसक उपायों से जीत सकते हैं. आपकी मिसाल से मानव समाज को प्रेरणा मिलेगी और अंतर्राष्ट्रीय सहकार और सहायता से हिंसा पर आधारित झगड़ों का अंत करने और विश्वशांति को बनाए रखने में सहायता मिलेगी. भक्ति और आदर के इस उल्लेख के साथ मैं आशा करता हूं कि मैं एक दिन आपसे आमने-सामने मिल सकूंगा.'

गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गए गांधीजी ने 18 अक्टूबर, 1931 को लंदन से ही इस पत्र का जवाब आइंस्टीन को लिखा- 'प्रिय मित्र, इससे मुझे बहुत संतोष मिलता है कि मैं जो कार्य कर रहा हूं, उसका आप समर्थन करते हैं. सचमुच मेरी भी बड़ी इच्छा है कि हम दोनों की मुलाकात होती और वह भी भारत-स्थित मेरे आश्रम में.'

दरअसल महात्मा गांधी के असहयोग, सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह जैसे अहिंसक तरीकों के बारे में यूरोप और अमेरिका के अखबारों में लगातार लिखा जा रहा था और आइंस्टीन तक भी ये विचार पहुंचे होंगे. इसी बीच आइंस्टीन ने दुनिया की सेनाओं से अपील की कि वे युद्ध में शामिल होने से इंकार कर दें. इससे पहले लियो टॉल्सटॉय भी लोगों को सेना में शामिल होने से इंकार करने का आह्वान कर चुके थे. लेकिन आइंस्टीन की इस अपील से यूरोप के कुछ शांतिवादी भी विचलित हुए थे, उन्हीं में से एक ब्रिटिश शांतिवादी रुनहम ब्राउन ने चार फरवरी, 1931 को महात्मा गांधी को चिट्ठी लिखी. ब्राउन यह जानना चाहते थे कि आइंस्टीन ने सैनिकों से युद्ध में शामिल न होने की जो अपील की है, उस पर गांधी के क्या विचार हैं. यह संभवतः पहला अवसर था, जब गांधी और आइंस्टीन एक-दूसरे के विचारों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा कर रहे थे.

छह मई, 1931 को ब्राउन के पत्र का जवाब देते हुए महात्मा गांधी ने लिखा- 'मेरा खयाल है कि प्रोफेसर आइंस्टीन का सुझाव सर्वथा तर्कसंगत है. और यदि युद्ध में विश्वास न करनेवालों के लिए युद्ध संबंधी सेवाओं में शामिल होने से इंकार करना उचित माना जाता है, तो इससे अनिवार्य निष्कर्ष यही निकलता है कि युद्ध का प्रतिरोध करनेवालों को कम से कम उनके साथ सहानुभूति तो रखनी ही चाहिए; भले ही उनमें अपने अंतःकरण की खातिर कष्ट सहन करने वाले लोगों के उदाहरण पर स्वयं अमल कर सकने जितना साहस न हो.'

इसके सात महीने बाद लंदन से लौटते हुए जब गांधी स्विटजरलैंड के शहर लोज़ान पहुंचे, तो वहां 8 दिसंबर, 1931 को उनकी

पहली सभा में ही लोगों ने उनसे कई सवाल किए. इस सभा में उनसे फिर से किसी ने सीधे-सीधे आइंस्टीन के हवाले से वही सवाल किया- 'आइंस्टीन ने आह्वान किया है कि सैनिकों को युद्ध में भाग लेने से इंकार कर देना चाहिए. उनके इस आह्वान पर आपके क्या विचार हैं?'

इस बार गांधीजी का जवाब दिलचस्प तो था ही, लेकिन इस जवाब के माध्यम से वे आइंस्टीन को इस विषय पर थोड़ा गहराई से सोचने के लिए प्रेरित भी कर रहे थे. उन्होंने कहा- 'मेरा उत्तर केवल एक ही हो सकता है. अगर यूरोप इस तरीके को उत्साहपूर्वक अपना सके तो मैं यही कहूंगा कि आइंस्टीन ने मेरा तरीका चुरा लिया है. लेकिन यदि आप यह चाहते हों कि मैं इस तरीके को विस्तार से समझाऊं तो मैं तनिक गहराई में उतरकर इसकी चर्चा करूंगा.'

'...सैनिक सेवा का अवसर आने पर जब कोई व्यक्ति इससे इन्कार करता है, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह ऐसे समय में बुराई का विरोध कर रहा है, जब विरोध करने का अवसर बिल्कुल बीत चुका है. रोग जरा गहरा है. मेरा कहना यह है कि जिनके नाम सैनिक सेवा करनेवालों की सूची में नहीं है, वे भी इस अपराध में उतना ही हाथ बंटा रहे हैं. इसलिए जो भी स्त्री या पुरुष कर इत्यादि देकर इस ढंग से गठित राज्य की सहायता करता है, वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उस पाप में हिस्सा बंटाता है.

'...राज्य को सहारा देनेवाली संपूर्ण पद्धति से असहयोग करने की तुलना में सैनिक सेवा करने से इन्कार करना बहुत ही सतही और नकली चीज है. लेकिन जब आपकी सैनिक सेवा करने की बारी आती है तो वह इतनी तेजी और इतने प्रभावकारी ढंग से आती है कि इनकार करने पर न केवल आपको जेल भेज दिए जाने का खतरा रहता है, बल्कि यह भय भी रहता है कि राज्य आपको कहीं का न छोड़े. टॉल्सटॉय यही कहते थे, जो बात आइंस्टीन ने कही है, उसको आजमाने का प्रसंग साल में कभी एकाध बार ही आएगा और सो भी कुछ ही लोगों के सामने. लेकिन आपका पहला कर्तव्य राज्य से असहयोग करना है.'

नौ दिसंबर, 1931 को स्विटजरलैंड के ही विलेन्यूव शहर में रोमां रोलां ने महात्मा गांधी का साक्षात्कार किया और अपने एक सवाल में रोमां रोलां ने थोड़ा मजाकिया अंदाज में आइंस्टीन का जिक्र करते हुए प्रथम विश्व-युद्धोत्तरकालीन जर्मनी के युवकों के बारे में कहा, 'जर्मनी का युवा-वर्ग युद्ध से पहले की अपेक्षा अब बिल्कुल बदल गया है। नया युवक 'सापेक्षता' की स्थिति में रह रहा है— इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि वे आइंस्टीन के देश के हैं'. जवाब में गांधीजी ने इस पर कोई सीधी टिप्पणी नहीं की. केवल इतना कहा कि 'भारतीय युवकों में चाहे बहुत बड़े बलिदान की क्षमता न हो, लेकिन वे अप्रतिरोध के प्रभाव में आ रहे हैं.'

जब यहूदियों के लिए अलग से इज़राइल नाम का देश बनाने के प्रयास शुरू हुए, तो गांधीजी ने हरिजन में लिखा—'कोई एक यहूदी कोई गलती करता है तो पूरी यहूदी दुनिया उसके लिए दोषी मान ली जाती है. लेकिन अगर आइंस्टीन जैसा यहूदी कोई बड़ी खोज करता है या कोई अन्य यहूदी कोई अद्वितीय संगीत रचता है, तो उसका श्रेय उस आविष्कारकर्ता या रचयिता को जाता है, उस समाज को नहीं, जिसके वे सदस्य हैं.'

30 जनवरी, 1948 को जब गांधीजी की हत्या हुई और पूरी दुनिया में शोक की लहर फैल गई, तो आइंस्टीन भी विचलित हुए बिना नहीं रहे थे. 11 फरवरी, 1948 को वाशिंगटन में आयोजित एक स्मृति सभा को भेजे अपने संदेश में आइंस्टीन ने कहा, 'वे सभी लोग जो मानव जाति के बेहतर भविष्य के लिए चिंतित हैं, वे गांधी की दुखद मृत्यु से अवश्य ही बहुत अधिक विचलित हुए होंगे. अपने ही सिद्धांत यानी अहिंसा के सिद्धांत का शिकार होकर उनकी मृत्यु हुई. उनकी मृत्यु इसलिए हुई कि देश में फैली अव्यवस्था और अशांति के दौर में भी उन्होंने किसी भी तरह की निजी हथियारबंद सुरक्षा लेने से इनकार कर दिया. यह उनका दृढ़ विश्वास था कि बल का प्रयोग अपने आप में एक बुराई है, और जो लोग पूर्ण शांति के लिए प्रयास करते हैं, उन्हें इसका त्याग करना ही चाहिए. अपनी पूरी जिंदगी उन्होंने अपने इसी विश्वास को समर्पित कर दी और अपने दिल और मन में इसी विश्वास को धारण कर उन्होंने एक महान राष्ट्र को उसकी मुक्ति के मुकाम तक पहुंचाया. उन्होंने करके दिखाया कि लोगों की निष्ठा सिर्फ राजनीतिक धोखाधड़ी और धोखेबाजी के धूर्ततापूर्ण खेल से ही नहीं जीती जा सकती है, बल्कि वह नैतिक रूप से उत्कृष्ट जीवन का जीवंत उदाहरण बनकर भी हासिल की जा सकती है.'

उन्होंने आगे लिखा, 'पूरी दुनिया में गांधी के प्रति जो श्रद्धा देखी गई, वह अधिकतर हमारे अवचेतन में दबी इसी स्वीकारोक्ति पर आधारित थी कि नैतिक पतन के हमारे युग में वे अकेले ऐसे स्टेट्समैन थे, जिन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी मानवीय संबंधों की उस उच्चस्तरीय संकल्पना का प्रतिनिधित्व किया जिसे हासिल करने की कामना हमें अपनी पूरी शक्ति लगाकर अवश्य ही करनी चाहिए. हमें यह कठिन सबक सीखना ही चाहिए कि मानव जाति का भविष्य केवल तभी सहनीय होगा, जब अन्य सभी मामलों की तरह ही वैश्विक मामलों में भी हमारा कार्य न्याय और कानून पर आधारित होगा, न कि ताकत के खुले आतंक पर, जैसा कि अभी तक सचमुच रहा है.'

उसी साल के अंत में दो नवंबर, 1948 को 'इंडियन पीस कांग्रेस' को भेजे गए अपने संदेश में आइंस्टीन ने इन शब्दों में महात्मा गांधी को याद किया था, '...क्रूर सैन्यशक्ति को दबाने के लिए उसी तरह की क्रूर सैन्यशक्ति का कितने भी लंबे समय तक इस्तेमाल करते रहने से कोई सफलता नहीं मिल सकती. बल्कि सफलता केवल तभी मिल सकती है, जब उस क्रूर बल का उपयोग करने वाले लोगों के साथ असहयोग किया जाए. गांधी ने पहचान लिया था कि जिस दुष्चक्र में दुनिया के राष्ट्र फंस गए हैं, उससे बाहर निकलने का रास्ता केवल यही है. आइए, जो कुछ भी हमारे वश में है, हम वह सब कुछ करें ताकि, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, दुनिया के सभी लोग गांधी के उपदेशों को अपने जीवन की बुनियादी नीतियों के रूप में स्वीकार करें.' ❑

गांधी के व्यक्तित्व का वैभव वर्णनातीत था!

❑ लुई फिशर

जून 1942 का जो सप्ताह मैंने सेवाग्राम में बिताया, उसके प्रारंभ में ही प्रकट हो गया था कि गांधीजी ने इंग्लैंड के विरुद्ध 'भारत छोड़ो' आंदोलन छेड़ने का पक्का इरादा कर लिया है। इस आंदोलन का यही नारा होने वाला था।

एक दिन तीसरे पहर, जब गांधीजी उन कारणों पर विस्तार से प्रकाश डाल चुके, जो उन्हें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा-आंदोलन शुरू करने के लिए उकसा रहे थे, तो मैंने कहा - 'मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजों के लिए पूरी तरह भारत छोड़कर चले जाना संभव नहीं है। इसका अर्थ होगा भारत को जापान के भेंट कर देना। इसके लिए इंग्लैंड कभी राजी नहीं होगा और संयुक्त राज्य इसे कभी पसंद नहीं करेगा। यदि आपकी मांग यह है कि अंग्रेज अपना बिस्तर-बोरिया समेट कर चले जायें, तो आप एक असंभव चीज मांग रहे हैं। आपका यह अभिप्राय तो नहीं है कि वे अपनी सेनाएं भी हटा लें?'

कम-से-कम दो मिनट तक गांधीजी मौन रहे। कमरे की निःस्तब्धता मानो सुनाई दे रही थी। और अंत में बोले - 'तुम ठीक कहते हो। हां, ब्रिटेन और अमरीका और अन्य देश भी यहां अपनी सेनाएं रख सकते हैं तथा भारत की भूमि का फौजी कार्रवाइयों के अड्डे की तरह उपयोग कर सकते हैं। मैं युद्ध में जापान की जीत नहीं चाहता। किन्तु मुझे विश्वास है कि जब तक भारतीय जनता आजाद न हो जाय, तब तक इंग्लैंड नहीं जीत सकता। जब तक ब्रिटेन भारत पर शासन करता रहेगा, तब तक वह कमजोर रहेगा और अपना नैतिक बचाव नहीं कर सकेगा।'

'परंतु यदि लोकतंत्री देश भारत को अड्डा बना दें, तो बहुत-सी उलझनें पैदा हो जायेंगी। सेनाएं हवा में नहीं रहा करतीं। मसलन, मित्र राष्ट्रों को रेलों के अच्छे संगठन की अपेक्षा होगी।'

'हां-हां', गांधीजी ने उच्च स्वर में कहा 'वे रेलों का संचालन कर सकते हैं। जिन बंदरगाहों पर उनकी रसद उतरे, वहां भी वे व्यवस्था कायम रखना चाहेंगे। वे नहीं चाहेंगे कि बंबई और कलकत्ता में दंगे-फसाद हों। इन मामलों में परस्पर सहयोग और सम्मिलित प्रयत्न की आवश्यकता होगी।'

क्या इस पारस्परिक सहयोग की शर्तें मित्रता के संधिपत्र में प्रस्तुत की जा सकती हैं?'

'हां', गांधीजी ने सहमति प्रकट की - 'लिखित इकरारनामा हो सकता है।'

'आपने यह बात अभी तक कही क्यों नहीं?' मैंने पूछा - 'मैं कबूल करता हूं कि जब मैंने सविनय अवज्ञा-आंदोलन के आपके इरादे की बाबत सुना, तो मेरा खयाल उसके विरुद्ध हो गया। मैं समझता हूं कि इससे युद्ध-प्रयत्न में बाधा पड़ेगी। यदि धुरी-राष्ट्र जीत गये, तो मुझे संसार में पूर्ण अंधकार होता दिखाई देता है। मेरा खयाल है कि यदि हम जीत जायें, तो हमको एक बेहतर दुनिया बनाने का मौका मिलेगा।'

'यहां मैं पूरी तरह सहमत नहीं हूं', गांधीजी ने तर्क दिया - 'ब्रिटेन अपने को अक्सर पाखंड के चोगे में छिपाये रखता है। वह ऐसे वादे करता है, जिन्हें बाद में निभाता नहीं। परंतु यह बात मैं मानता हूं कि लोकतंत्री राष्ट्र जीत जायें तो बेहतर मौका मिलेगा।'

'यह इस पर निर्भर है कि हम किस तरह की शांति रखते हैं'', मैंने कहा।

'यह इस पर निर्भर है कि आप युद्ध में क्या करते हैं', गांधीजी ने मेरी गलती सुधारी - 'युद्ध के बाद स्वाधीनता में मेरी दिलचस्पी नहीं है। मैं अभी स्वाधीनता चाहता हूं। इससे इंग्लैंड को युद्ध जीतने में मदद मिलेगी।'

मैंने फिर पूछा - 'आपने अपनी यह योजना वाइसराय तक क्यों नहीं पहुंचाई? वाइसराय को मालूम होना चाहिए कि मित्र राष्ट्रों की फौजी कार्रवाइयों के लिए भारत को अड्डा बनाये जाने में अब आपको कोई आपत्ति नहीं है।'

'किसी ने मुझसे पूछा ही नहीं।' गांधीजी ने ढीलेपन से उत्तर दिया।

आश्रम से मेरे रवाना होने से पूर्व महादेव देसाई ने मुझसे चाहा कि मैं वाइसराय से कहूं कि गांधीजी उनसे मिलना चाहते हैं। महात्माजी समझौते के लिए और शायद सविनय अवज्ञा आंदोलन का विचार छोड़ने के लिए तैयार थे। बाद में दिल्ली में, मुझे गांधीजी का एक पत्र राष्ट्रपति रूजवेल्ट को देने के लिए मिला। साथ के पुर्जे में गांधीजी की विशिष्टता लिए हुए शब्द थे - 'यदि यह आपको पसंद न आये तो इसे फाड़ देना।'

गांधीजी महसूस करते थे कि भारत के बारे में लोकतंत्री राष्ट्रों की स्थिति नैतिक दृष्टि से असमर्थनीय थी। रूजवेल्ट या लिनलिथगो इस स्थिति को बदलकर उसे रोक सकते थे, वरना उनके हृदय में कोई शंका नहीं थी। नेहरू तथा आजाद शंका करते थे। महात्माजी से मतभेद के कारण राजाजी कांग्रेस का नेतृत्व छोड़ चुके थे। परंतु गांधीजी विचलित नहीं हुए। नेहरू और आजाद को उन्होंने अपनी बात जंचा दी। नेहरू विदेशी तथा घरेलू स्थिति को अनुकूल नहीं मानते थे। गांधीजी ने बतलाया - 'मैंने लगातार सात दिन तक उनसे बहस की। जिस भावावेश के साथ वह मेरी स्थिति के विरोध में लड़े, उसे मैं बयान नहीं कर सकता।'

'परंतु आश्रम से रवाना होने से पहले', गांधीजी के शब्दों में 'तथ्यों के तर्क ने उन्हें परास्त कर दिया।' सच तो यह है कि नेहरू प्रस्तावित सविनय अवज्ञा आंदोलन के इतने कट्टर समर्थक बन गये थे कि जब कुछ दिन बाद बंबई में मैंने उनसे पूछा कि गांधीजी को वाइसराय से मिलना चाहिए या नहीं, तो उन्होंने उत्तर दिया ' 'नहीं, किसलिए?' गांधीजी अब भी वाइसराय से मुलाकात की आशा लगाये हुए थे।

गांधीजी में महान आकर्षण था। वह एक निराली प्राकृतिक विचित्रता थे, शांत तथा इस प्रकार अभिभूत करने वाले कि पता भी न लगे। उनके साथ मानसिक संपर्क आनंददायक होता था, क्योंकि वह अपना हृदय खोलकर रख देते थे और दूसरा व्यक्ति देख सकता था कि मशीन किस तरह चल रही है। वह अपने विचारों को कभी पूर्ण रूप से व्यक्त करने का प्रयत्न नहीं करते थे। वह मानो बोली में सोचते थे, अपने विचार को हर कदम प्रकट कर देते थे। आप केवल उनके शब्दों को ही नहीं, बल्कि उनके

विचारों को भी सुनते थे। इसलिए आप परिणाम पर पहुंचने की उनकी गति को सिलसिलेवार देखते थे। यह चीज उन्हें प्रचारक की भांति बात करने से रोकती थी। वह मित्र की भांति बात करते थे। वह विचारों के परस्पर आदान-प्रदान में दिलचस्पी रखते थे और इससे भी अधिक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने में।

गांधीजी का कहना था कि स्वाधीन भारत में संघीय प्रशासन अनावश्यक होगा। मैंने उन्हें संघीय प्रशासन के अभाव से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयां बतलायीं। यह बात उनके गले नहीं उतरी। मैं चकरा गया। अंत में उन्होंने कहा - 'मैं जानता हूं कि मेरे मत के बावजूद केन्द्रीय सरकार बनेगी।' यह विशिष्ट गांधी चक्र था। वह किसी सिद्धांत का प्रतिपादन करते थे, उसकी वकालत करते थे और फिर हंसते हुए मान लेते थे कि वह अव्यावहारिक है। समझौते की बातचीत में यह प्रवृत्ति अत्यंत झुंझलाने वाली और समय नष्ट करने वाली हो सकती थी। कभी-कभी तो वह अपनी कही हुई बातों पर खुद भी आश्चर्य करते थे। उनकी विचार प्रणाली तरल थी। अधिकतर लोग चाहते थे कि उनकी बात सही प्रमाणित हो। गांधीजी भी चाहते थे, परंतु अक्सर वह गलती को मंजूर करके जीत जाते थे।

बूढ़े लोगों को पुरानी बातें याद आया करती हैं। लॉयड जॉर्ज सामयिक घटनाओं के बारे में प्रश्न का उत्तर देना शुरू करते थे, परंतु शीघ्र ही यह बताने लगते थे कि उन्होंने प्रथम महायुद्ध या सदी के प्रारंभ में सामाजिक सुधार का आंदोलन किस प्रकार चलाया। परंतु तिहत्तर वर्ष की आयु में भी गांधीजी पुरानी बातें याद नहीं करते थे। उनका दिमाग तो आने वाली चीजों पर था। वर्ष उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते थे, क्योंकि वह तो अनंत भविष्य की बातें सोचते थे। उनके लिए केवल घंटों का महत्त्व था, क्योंकि जो कुछ वह भविष्य को दे सकते थे, उसका यह नाप था।

गांधीजी के पास प्रभाव से कुछ अधिक था। उनके पास सत्ता थी, जो सामर्थ्य से कम, किन्तु बेहतर होती है। सामर्थ्य मशीन का गुण होता है, सत्ता व्यक्ति का गुण होती है। राजनीतिज्ञों में दोनों का तारतम्य होता है। अधिनायक के पास सामर्थ्य लगातार जमा होती रहती है, जिसका दुरुपयोग अनिवार्य होता है और यह सामर्थ्य उसकी सत्ता को छीन लेती है। गांधीजी के सामर्थ्य-त्याग ने उनकी सत्ता को बढ़ा दिया। सामर्थ्य अपने शिकारों के खून और आंसुओं पर पनपती है। सत्ता को सेवा, सहानुभूति तथा स्नेह पनपाते हैं।

मैं गांधीजी की बातों को ध्यान से सुनता आया हूं, परंतु मुझे बराबर यह आश्चर्य हो रहा है कि जनता पर गांधीजी के अतिम प्रभाव का मूल स्रोत क्या है, फिलहाल मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यह उनकी आसक्ति है। यह आसक्ति शमित और अस्फुट थी। उनमें मृदुल तीव्रता, कोमल दृढ़ता और धीरता की रुई में लपेटी हुई अधीरता थी। गांधीजी के साथियों को तथा अंग्रेजों को कभी-कभी उनकी तीव्रता, दृढ़ता और अधीरता पर रोष होता था। परंतु अपनी मृदुलता, कोमलता तथा धीरता के द्वारा वह अपने प्रति उनका आदर और अक्सर उनका प्रेम भी बनाये रखते थे।

गांधीजी एक दृढ़ व्यक्ति थे और उनकी दृढ़ता का कारण उनके व्यक्तित्व का ऐश्वर्य था, न कि उनकी सम्पत्ति की बहुलता। उनका लक्ष्य था असंग्रह, परिग्रह नहीं। आनंद उन्हें आत्मबोध के द्वारा पैदा होता था। वह अभय थे, इसलिए उनका जीवन सत्यमय था। वह अकिंचन थे, पर अपने सिद्धांतों की कीमत चुका सकते थे।

गांधीजी व्यक्तिगत नैतिकता तथा सार्वजनिक व्यवहार के बीच एकता के प्रतीक हैं। जब विवेक घर में तो रहता है, परंतु कारखाने में, दफ्तर में, पाठशाला में और बाजार में नहीं रहता, तो भ्रष्टाचार, क्रूरता और अधिनायकशाही के लिए रास्ता खुल जाता है।

गांधीजी ने राजनीति तथा आचार-नीति को संपन्न बनाया। वह प्रत्येक दिन के विचारार्थ विषयों को शाश्वत तथा सार्वभौम मूल्यों के प्रकाश में सुलझाते थे। क्षणभंगुर वस्तुओं का सार खींचकर वह स्थाई तत्त्व निकाल लेते थे। इस प्रकार वह मनुष्य के कार्य को कुंठित करने वाली प्रचलित धारणाओं के ढांचे को तोड़कर निकल जाते थे। उन्होंने कार्य का एक नया परिणाम खोज निकाला था। व्यक्तिगत सफलता या सुख के लिहाजों से न बंधकर उन्होंने सामाजिक परमाणु का विघटन कर दिया और शक्ति का नया स्रोत पा लिया। इसने उन्हें आक्रमण के वे हथियार दिये, जिनका कोई बचाव नहीं था। उनकी महानता इसमें थी कि वह ऐसे काम करते थे, जिन्हें हर कोई कर सकता है, परंतु करता नहीं है।

गांधीजी के जीवन-काल में ठाकुर ने लिखा था - 'कदाचित वे सफल नहीं हो पायेंगे। कदाचित वे उसी प्रकार असफल होंगे, जिस प्रकार मनुष्य को खलता से हटाने में बुद्ध तथा ईसा असफल रहे। परंतु लोग उन्हें सदा ऐसे व्यक्ति की तरह याद करेंगे, जिसने अपने जीवन को आने वाले अनंत युगों के लिए एक नसीहत बना दिया।' ❑

शेख हुसैन सर्वोदय समाज के संयोजक मनोनीत

विगत 12 सितंबर 2019 को सेवाग्राम में संपन्न हुई सर्व सेवा संघ कार्यसमिति की बैठक में श्री शेख हुसैन को सर्वसम्मति से सर्वोदय समाज का संयोजक मनोनीत किया गया। ज्ञातव्य है कि इसके पहले वे सर्व सेवा संघ के महामंत्री थे। पिछले 15 से अधिक वर्षों से वे सर्वोदय आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। वे राष्ट्रीय युवा संगठन के राष्ट्रीय संयोजक भी रहे हैं। फिलहाल वे सद्भावना संघ के सह-संयोजक के रूप में भी उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं।

चंदनपाल सर्व सेवा संघ के महामंत्री नियुक्त

श्री चंदन पाल को सर्व सेवा संघ का महामंत्री नियुक्त किया गया है। चंदन पाल लगभग 55 सालों से सर्वोदय कार्यकर्ता के तौर पर सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हैं। उन्होंने जयप्रकाश के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति आंदोलन में भी सक्रिय भाग लिया। वे तरुण शांति सेना और छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के भी सक्रिय साथी रहे हैं। 1971 में बांग्लादेश मुक्ति आंदोलन के दौरान उन्होंने कोलकाता के बांगलादेशी शरणार्थी शिविरों में भी सक्रिय भूमिका निभायी।

–महादेव विद्रोही, अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ

सत्तर साल पहले

प्राण देवता के उपासक से रिक्त हुई भारत-भूमि

❑ लक्ष्मणशास्त्री जोशी

महात्मा गांधी जब अमर स्वरूप में विलीन हुए उस समय मैं कलकत्ते में था। उस घटना के बारे में मैंने अपने लड़के को जो पत्र लिखा, उसमें यह कहा था कि महात्मा गांधी का हत्यारा मनुष्य जाति में पैदा हुआ, यह मनुष्य जाति का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। महात्मा गांधी जब हरिजन दौरे पर थे, उस वक्त 1935 में उनके मर्त्य शरीर पर पूना में बम फेंका गया। सुदैव से उसका निशाना चूक गया। उस समय मैं पूना में ही था। इस दुर्घटना में वे सुरक्षित रहे, इसके उपलक्ष्य में पूना शहर में एक सभा हुई। मुझे स्मरण आता है कि उस सभा में भी मैंने इसी तरह का कुछ कहा था। गांधीजी की मृत्यु से मुझे अतिशय दुःख हुआ। वैसे मेरा स्वभाव शोक करने का नहीं है। परंतु उनकी मृत्यु से मुझे शोक होने का कारण यह है कि उनका खून मेरी जाति के व्यक्ति ने किया। मेरी जाति से मतलब ब्राह्मण जाति नहीं, बल्कि मानव जाति है। जिसे मनुष्यों में जन्म पाने का भाग्य प्राप्त हुआ, ऐसे व्यक्ति ने यह हत्या की, इसका मुझे बहुत दुःख हुआ। कारण कि गांधीजी का जन्म मानव जाति के महत्त्वपूर्ण मूलभूत प्रश्न हल करने के लिए हुआ था।

मानवता का विलक्षण मार्ग : मानव जाति के मुख्य प्रश्न हल करने में अद्यतन विज्ञान या शस्त्रास्त्र अर्थात् केवल बाह्य साधन असमर्थ हैं। ये प्रश्न शस्त्रों से हल नहीं हो सकते। उनको हल करने के लिए मनुष्य के पास अंतःकरण और जिनका प्रत्यय बुद्धि में हुआ है, ऐसे उच्चतर मूल्य अनिवार्य हैं। ये उच्चतर मूल्य ही मनुष्य के श्रेष्ठ और प्रभावशाली साधन हैं। इसी विलक्षण मार्ग से गांधीजी जा रहे थे। वह मानवता का मार्ग था। श्रेष्ठ और महान मार्ग था। मनुष्य पशु नहीं है। उसे जीवन पर और विश्व पर अधिकार अध्यात्म के कारण यानी मानसिक सामर्थ्य के कारण प्राप्त हुआ है।

अनुभूतिजन्य तत्त्वज्ञान : ऐसा देखा जाता है कि संस्कृति का इतिहास मनुष्य के मानसिक सामर्थ्य का विकास है। कुछ वर्ष पहले मैं समझता था कि गांधी जी श्रद्धावादी हैं। श्रद्धावाद बुद्धिवाद की अपेक्षा गौण है। बुद्धि हर हालत में श्रेष्ठ है। यह ठीक है, फिर भी ज्ञानशास्त्र में यह सवाल होता है कि बुद्धिवाद का स्रोत कहां है? आखिर बुद्धि आती कहां से है? श्रद्धा बुद्धि का फल है। ज्ञात सत्य के लिए अनुराग का ही नाम श्रद्धा है। बोध का उद्गम अनुभव में से होता है। अनुभव सारे ज्ञान की बुनियाद है। अनुभव में से शास्त्र का निर्माण होता है। जो शास्त्र अनुभूति में से अवतीर्ण होता है वही, शास्त्र सत-शास्त्र सिद्ध होता है। जिनका अनुभव विशाल होता है, उनकी बुद्धि भी श्रेष्ठ होती है। फ्रांसीसी दार्शनिक बर्गसाँ का तत्त्वज्ञान अनुभूति की नींव पर रचा गया है। वह बुद्धि को गौण स्थान देता है। बुद्धि के लिए सत्य गम्य नहीं है। बुद्धि से परे स्फूर्तिमय प्रज्ञा सत्य का आकलन करती है, ऐसा बर्गसाँ का सिद्धांत है। लेकिन स्फूर्तिमय प्रज्ञा और तर्कात्मक बुद्धि एक दूसरे की पूरक हैं। ये दोनों मानसिक अवस्थाएं एक दूसरे की संगति में काम करती हैं।

जीवन के नियमों का साक्षात्कार : बेथोवेन एक जर्मन संगीतज्ञ था। संगीत का आस्वाद तो सभी लेते हैं लेकिन बेथोवेन को ध्वनि की सूक्ष्म संवित्ति होती थी। उसे उच्चतर ध्वनि का साक्षात्कार होता था। प्रज्ञा, साक्षात्कार, अनुभूति, श्रेष्ठ शक्ति है। यह एक विलक्षण वस्तु है। अलौकिक और अप्रतिम कर्तृत्व का रहस्य इस अद्भुत शक्ति में छिपा हुआ है। जिन्हें वह प्राप्त नहीं होती, उनका क्षेत्र मर्यादित ही मान लेना चाहिए। यह साक्षात्कार जगद्विजयी धुरंधर सेनापतियों को होता है। नेपोलियन लड़ाई से पहले विशेषज्ञों से परामर्श लेता था और कुछ निश्चित योजनाएं भी बना लेता था। परंतु एक बार लड़ाई के मैदान में उतरने पर वह अपने इन निश्चयों को बदल भी देता था। इसलिए विजय श्री उसे वरमाला पहनाती थी। यही बात महान कलाकारों, तत्त्ववेत्ताओं, कवियों और विज्ञानवेत्ताओं के लिए भी लागू है। कुछ व्यक्तियों में साक्षात्कार या प्रतीति (इन-ट्यूशन) का स्वरूप अत्यंत अद्भुत होता है। गांधीजी को धर्म के द्वारा मानवीय जीवन के नैतिक नियमों की प्रतीति हुई थी। धर्म संस्था ने मनुष्य के नैतिक प्रयत्नों को तेजस्वी रखने का प्रयत्न किया। इसलिए आज पश्चिम के कई देशों में कुछ बड़े बड़े वैज्ञानिक धर्म का सहारा लेने की कोशिश कर रहे हैं।

आंधी का देवता गांधी : महात्मा गांधी के आंदोलन और लड़ाइयां हमने आंखों से देखी हैं। हम बहुत बड़भागी हैं। उनके जीवन का अर्थ कई बड़े बड़े बुद्धिमान पंडित भी नहीं लगा सके। लोकमान्य तिलक ने गांधीजी से एक दफा कहा, 'आपके सत्याग्रह के लिए हजार आदमी चाहिए। वे कहां से दें? जब लोग ही तैयार नहीं हैं तो यह सब कैसे मुमकिन हो?' जो लोग अंगुलियों पर गिनते हैं और हिसाब पर भरोसा रखते हैं, उन्हें कल्पना के सामर्थ्य का प्रभाव प्रतीत नहीं होता। शूरता का उद्गम हिसाब में नहीं है। उसके लिए स्फूर्ति, प्रतीति चाहिए। गांधीजी का प्रत्यय अत्यंत अद्भुत था। तूफान से पहले पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिलता, परंतु थोड़े ही समय में प्रचंड वेग से चलने वाली आंधी बड़े बड़े पेड़ों को भी जड़ से उखाड़ देती है। पर्वतों का आत्मविश्वास भी डगमगाने लगता है। गांधीजी की बुद्धि कुछ इसी तरह की थी। उनका प्रत्यय बहुत महान था। यह महान प्रत्यय पंडितों की प्रज्ञा से भी कई दफा आगे बढ़ जाता था। 1920 में गांधीजी ने घोषणा की कि एक साल में स्वराज प्राप्त करा देता हूं। कई लोगों ने हंसी उड़ायी। बुद्धिमानों ने सोचा, इतनी जल्दी स्वराज कैसे मिलेगा? बगैर लड़ाई के किसी को स्वराज मिला है? लेकिन दरअसल कहना तो यही चाहिए कि हिन्दुस्तान को एक साल में ही स्वराज मिला। राष्ट्रों की आयु में पचीस वर्ष एक साल से भी कम होते हैं। हमने देखा है कि उन्नीस सौ बीस और तीस में सारा देश दहल उठा। बुद्धिमानों को इसकी कोई कल्पना नहीं थी। गांधीजी का सारा जीवन ऐसा ही था। गांधीजी का जीवन मानो आंधी के देवता का ही जीवन था।

मानवता ही नैतिकता : संसार में आज तक गांधीजी जैसे जो जो महापुरुष हुए, चाहे वे आस्तिक रहे हों या नास्तिक, वे सब मानवता के इस मूल तत्त्व तक पहुंच गये थे। कार्ल मार्क्स मूलतः मानवतावादी था। उसका ध्येयवाद

मेरे सपनों का भारत

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्त्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें ऊंच-नीच का कोई भेद न हो। जातियां मिलजुल कर रहती हों। ऐसे भारत में, अस्पृश्यता व शराब तथा नशीली चीजों के अनिष्टों के लिए, कोई स्थान न होगा। उसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलेंगे। सारी दुनिया से हमारा संबंध शांति और भाईचारे का होगा। यह है मेरे सपनों का भारत।

मनुष्यव्यापी था। कार्ल मार्क्स के विचारों के कई मनुष्य अतुल स्वार्थ त्याग के लिए प्रवृत्त हुए हैं। क्रांति की आग में भस्मसात हुए हैं। यह प्रेरणा मार्क्स के अर्थवाद में से पैदा नहीं हो सकती। उसकी उद्‌गम नीति शास्त्रों में है। मार्क्स का कैपिटल नामक ग्रंथ बहुत थोड़े लोग समझ पाते हैं। मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि संसार में कम्युनिस्ट पार्टी में भी ऐसे बहुत थोड़े लोग हैं जिन्होंने इस ग्रंथ का अध्ययन करके उसे समझा हो। फिर भी मार्क्स ने इतने बड़े पैमाने पर दुनिया को मंत्रमुग्ध कैसे कर डाला? यह चमत्कार उसके शास्त्रज्ञान का नहीं है। मार्क्स ने दास बने हुए मानव को हृदय का स्फूर्तिदायक संदेश दिया, आश्वासन दिया और भविष्यकाल के लिए आशा का प्रकाश दिया। इसीलिए यह जागतिक उथल-पुथल हुई। इस प्रकार का ध्येयवाद नैतिक होता है क्योंकि वह मनुष्य मात्र को व्याप्त करता है। मनुष्य मूलतः नीतिमान है और व्यापकता नीति का स्वाभाविक धर्म है। बुद्धि का तत्त्व भी व्यापक होता है। विशेष की तरफ से सामान्य की ओर ले जाना बुद्धि का काम है। व्यापकता की पूर्ण रूपता ही ब्रह्मरूपता है। यही जीवन का अबाधित सिद्धांत है। नीति और सत्य मानवीय जीवन के आधार हैं। नीति सबसे पहले माता में प्रकट होती है। इसलिए गांधीजी स्त्रियों को अधिक मानते थे। मनुष्य के जन्म के साथ ही धर्मशास्त्र का भी जन्म हुआ। नीति के नियम तोड़ने पर उसके परिणाम मनुष्यों को भुगतने पड़ते हैं। इंडक्टिव लॉजिक (उद्‌गामी तर्क) से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है क्योंकि उद्‌गम का आरंभ साक्षात्कार से होता है। विशेष से सामान्य की तरफ जाना तभी संभव होता है। सृष्टि के नियम मानवीय जीवन की कक्षा में नीति के रूप में प्रकट होते हैं। सृष्टि के नियमों का पालन मनुष्य को करना ही पड़ता है।

प्रेम, जीवन का मध्यबिन्दु : गांधीजी भारतवर्ष में पैदा हुए किन्तु वे केवल भारतीय नहीं थे। वे कहा करते थे कि मैं अंग्रेजों का मित्र हूं। यह बात संपूर्ण रूप से सत्य है। इस सत्य को न पहचानकर अंग्रेजों के द्वेष से प्रेरित होकर लोग गांधीजी के अनुयायी बने। अब उस द्वेष का विषय नहीं रहा। इसलिए कर्तव्यतत्परता जड़ नहीं पकड़ती। द्वेष की जगह प्रेम को मिलनी चाहिए। प्रीति शुद्ध और अगाध बननी चाहिए। द्वेष से जो पराक्रम होते हैं, उनसे मनुष्य की प्रगति नहीं होती। प्रेम-प्रेरित पराक्रम मनुष्य जाति के लिए अचल अविनाशी सोपान-परंपरा का निर्माण करते हैं। ऐसी सोपान-परंपरा का निर्माण करने वालों में महात्मा गांधी विराजमान हैं। इसलिए संसार को यह अनुभव होता है कि उनकी मृत्यु से अपरिमित हानि हुई।

इंग्लैंड के महान प्रज्ञावंत शास्त्रज्ञ व्हाइट हेड ने अपनी 'ऐंडवेंचर्स ऑफ आयडिया' नामक पुस्तक में गांधीजी के हृदय परिवर्तन के आंदोलन का अत्यंत आदर के साथ उल्लेख किया है। और उसे मनुष्य के इतिहास का एक महान प्रयोग कहकर उसका गौरव किया है। लोगों के विचारों में मौलिक परिवर्तन करना एक महान सिद्धांत है। इसी सिद्धांत के अनुसार जनतंत्र का निर्माण होता है। इसमें मानवीय पराक्रम है, इस पराक्रम की स्फूर्ति गांधीजी को मिली।

प्राणदेवता का उपासक : राजेन्द्र बाबू ने कहा 'गांधीजी की हत्या का कारण हमारा पाप है।' बात ठीक है। गांधीजी केवल राजनैतिक पुरुष नहीं थे। प्रधानतः वे साधु पुरुष थे। उनके शरीर का नाश किया गया लेकिन वे शरीर से ही नहीं, बल्कि आत्मा से भी जाते रहे। गांधीजी की मृत्यु से पहले हमारा देश द्वेष के पाप में डूबा हुआ था। इस देश में उनके रहने के लिए जगह नहीं थी। वे प्राण देवता के उपासक थे। उपनिषद् में याज्ञवल्क्य कहते हैं कि 'प्राण सबसे महान एक ही देवता है।' उस प्राण देवता के मंदिर में अर्थात् मानव समाज में और विशेषकर भारत वर्ष में उस देवता का विरोधी पातक अपना प्रभाव जमाने लगा। इसलिए प्राण देवता का यह भक्त अपने देवता की उपासना के लिए संघर्ष करता हुआ इस संसार से चल बसा। परंतु वह केवल शरीर से ही नहीं गया, अपितु अपनी आत्मा को, नैतिक स्फूर्ति को भी साथ लेकर चला गया।

वीरता का महामेरु : गांधीजी कहते थे कि नीति में जो अपवाद होते हैं, वे दोषरूप ही हैं। 'जैसे को तैसा' अपथ्यकर सिद्धांत है। गांधीजी ने कहा 'जो तुमसे द्वेष करें, उनसे तुम प्रेम करो। प्रेम जीवन का मध्यबिन्दु है। उसी में मनुष्य का पराक्रम है। जो लोग, जो धर्म, जो संस्कृतियां इस मार्ग से दूर गयीं, उनका कहीं पता भी नहीं लगता। वे हमेशा के लिए नष्ट हो गयीं।' हमें गांधीजी के तंत्र और मंत्र के अर्थ को भली भांति समझ लेना चाहिए। लोग प्रायः केवल तंत्र से चिपटते हैं और मंत्र को छोड़ देते हैं। राग, द्वेष, मत्सर इत्यादि विकारों से जो लड़ते हैं, वे सच्चे पराक्रमी हैं। ऐसी सारी शूरता के महामेरु गांधीजी थे। उन्हें सत्य दिखायी देता था और इसलिए वे लगातार उसकी तरफ आगे आगे बढ़ते जाते थे। वे थकते नहीं थे। सत्य का शोधक थकता नहीं है। शास्त्रों और कला का विजयी इतिहास कभी न थकने वाले सत्यान्वेषकों का बनाया हुआ है।

अनुभव-सागर गांधीजी : महात्मा गांधी की गणना कोई पंडितों और बुद्धिवादियों में न करे। बुद्धिमत्ता और पांडित्य का आधार अनुभव है। गांधीजी अनुभव सागर थे। मनुष्य को द्वेष से जो स्फूर्ति मिलती है, वह उसे मृत्यु की तरफ ले जाती है, अमरत्व की ओर नहीं। पक्ष, संघ, दल, द्वेष की प्रेरणा से बढ़ते हुए दिखायी देते हैं परंतु ये सब अंत में मृत्यु का आलिंगन करते हैं। प्रेम से मिलने वाली प्रेरणा ही सत्य प्रेरणा है। जिन संस्कृतियों ने इस प्रेरणा को नहीं अपनाया, उनके कब्रिस्तान सब तरफ दिखायी देते हैं। यदि द्वेष की महिमा बढ़ी तो हमारी संस्कृति की भी यही गति होगी।

गांधीजी का पुनरुत्थान : गांधीजी इस देश में से निर्वासित हो गये हैं। यहां के वायुमंडल में उनके लिए सांस लेने की भी गुंजाइश नहीं थी। कहा जाता है कि ईसा का तीसरे दिन पुनर्जन्म हुआ। क्या इस देश में गांधीजी के पुनरुत्थान के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा होगी? उनकी दिव्य स्फूर्ति का तत्त्व समझ लीजिए, मृत्यु अमरता का ढँकना है। मैं गांधीजी की आत्मा का अभिवादन करता हूं। ❑

गली-गली में ढूंढ़ रहा मैं

❑ उमेश प्रसाद सिंह

सुना है, पाण्डवों के परिक्षीण कुल के अभिशप्त उत्तराधिकारी महाराज परीक्षित प्रायः बेचैन होकर मनुष्य जाति के धर्म के संरक्षक द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण को ढूंढने लगते थे। वे कातर भाव से पुकारने लगते थे, पूछने लगते थे कि गर्भ में क्रूर अश्वस्थामा के ब्रह्मास्त्र की ज्वाला से जीवन की रक्षा करने वाले करुणा की अक्षय शीतलता के आश्रय अमित पराक्रमी पुरुष कृष्ण कहां हैं?

मगर अपने दुर्भाग्य के अछोर विस्तार में डूबे हुए परीक्षित को कृष्ण कहीं दिखायी नहीं पड़े। आज स्वतंत्र भारत की जाग्रत आत्मचेतना चीख-चीखकर, चिल्ला-चिल्लाकर, सिसक-सिसककर, खीझ-खीझकर अपने आत्मगौरव पर मुग्ध आत्मविमोहित नायकों, महानायकों से पूछ रही है, कहां हैं? कहां हैं? गांधी कहां हैं?

इस स्वाधीन महादेश के महिमामय, गरिमामय लोकतंत्र में महात्मा गांधी कहां हैं?

आधुनिक भारत में राष्ट्रीयता के गौरवशाली शिशु के पोषक और पालक राष्ट्रपिता कहां हैं?

स्वतंत्रता की अंगड़ाई की चिनगारी भर आग को अपने प्रचंड आह्वान की प्राणवायु से लपट बना देने वाले 'हिन्द स्वराज' के प्रस्ताव के उद्घोषक मोहनदास कहां हैं?

नमक सत्याग्रह के माध्यम से जीवन की जरूरतों को राज्याधिकार से मुक्त रखने का शंखनाद करने वाले क्रांतिधर्मी विद्रोही गांधी कहां हैं?

सत्य को ईश्वर घोषित करने वाले आंतरिक शुचिता के अनन्य उपासक गांधी कहां हैं?

सवधर्म में समभाव की आस्था की प्रतिष्ठापक राजनीति में त्याग की तपस्या के साधक बापू कहां हैं?

देश के अंतिम आदमी की आंख में झांकर निर्णय लेने के आकांक्षी गांधी कहां हैं?

सहिष्णुता के, बंधुत्व के और नागरिक स्वावलंबन के उपासक गांधी कहां हैं?

ग्रामोदय के, ग्राम स्वराज के आदर्श के अधिष्ठाता, मातृभाषा में बुनियादी शिक्षा के मूल्य के परिचायक, कुटीर उद्योग पर आधारित अर्थव्यवस्था से राष्ट्र की समृद्धि के समानदर्शी गांधी कहां हैं?

समता और बंधुत्व के लिए सब कुछ को बाजी पर लगा देने वाले विश्वबंधु गांधी कहां हैं?

ये सवाल बराबर गूंजते हैं। सोये में, जागे में हर समय गूंजते हैं। जो सुनता है, चिहुंक चिहुंक पड़ता है। ये सवाल हर उस भारतीय जन के कानों में गूंज रहे हैं, जो आमजन के सपनों को खरीदने-बेचने के व्यापार में शामिल होने से बचा हुआ है।

अपनी व्यवस्था में गांधी की मौजूदगी को खोजने वाली बेचैनी केवल पछाड़ खा-खाकर औंधे मुंह गिरने वाली बेचैनी बनकर रह गयी है। हमारी शासन-व्यवस्था में, शिक्षा व्यवस्था में, स्वास्थ्य व्यवस्था में, रोजगार व्यवस्था में कहीं भी गांधी की मौजूदगी का एहसास हमारे समय में सिर्फ एक असंभावना है।

हां, जिन्दा गांधी, जीवित गांधी, जाग्रत गांधी ही कहीं है। मरे हुए गांधी, मारे गये गांधी कहीं नहीं हैं। वे हमारी सरकार की तरफ से जारी किसिम-किसिम के नोटों पर हैं। कहीं कहीं पार्कों-चौराहों पर खड़ी मूर्तियों में हैं। न्यायालयों, कार्यालयों की पिछली दीवारों पर टंगे हुए हैं। जहां कहीं भी गांधी हैं, अंधे, बहरे, गूंगे की तरह हैं। हमारे समय में गांधी जहां भी हैं, मरे हुए हैं।

फिर भी हमारा गुमान है कि हम कृतज्ञ हैं। हम किताबों में पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं कि हमारी संस्कृति का मूल्यवान मूल्य कृतज्ञता है। बड़ा अद्भुत है। अब तो गांधी की हत्या करने वाले गोडसे की जय बोलने वाले व्यक्तित्व हमारी संसद की गरिमा का शृंगार करने लगे हैं। यह भी कृतज्ञ राष्ट्र की धन्यता का अपूर्व उदाहरण है। फिर भी हम शान से कह रहे हैं, कहते जा रहे हैं कि हम विकास के रास्ते काफी आगे निकल चुके हैं। भला राष्ट्र के विकास की उपलब्धियों की अवहेलना करके राष्ट्रद्रोही होने का साहस कौन जुटाये? यह कौन कहे कि गांधी की हत्या करने वालों में गांधी की जय बोलने वालों की बड़ी जमात भी शामिल है। मैं नहीं जानता यह सब हमारे चिन्तन के विकास के लिए गर्व का विषय है या ग्लानि का? मैं सोचता हूं कि यह प्रश्न भारत के वर्तमान के लिए महत्त्वपूर्ण हो, न हो मगर भारत के भविष्य के लिए अवश्य ही महत्त्वपूर्ण है। आने वाली पीढ़ियों को यह तय करना ही होगा।

मैंने गांधी को इतिहास की किताबें पढ़कर नहीं जाना है। अगर मैंने किताबों में पढ़कर गांधी को जाना होता तो किसी तरह की असुविधा का सामना करने की कोशिश से बचा रह जाता। मैंने बचपन में अपने बाबा में गांधी की झलक देखी है। उनमें जीवित गांधी को यथावत मैं देखता रहा हूं। अपने सारे व्यक्तिगत को सार्वजनिक कर देने की निष्ठा गांधी की विरासत का केन्द्र रही है। अपने सारे उद्योग को राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर देने की आस्था वाली पीढ़ी को मैंने बचपन में देखा है। बचपन की स्मृतियां इतनी गहरी हैं कि वे स्मृति के कोश से मिटने को राजी ही नहीं होतीं। इधर हमारा अभियान है कि सारे सार्वजनिक को व्यक्तिगत बनाने पर तुला है। गांधी की विरासत आज पता नहीं कहां है?

मैं परीक्षित नहीं हूं। फिर भी पता नहीं क्यों परीक्षित के प्रश्न मेरे पीछे पड़े हैं।

भारतीय जाति में स्वतंत्रता की शिशुता के पोषक गांधी कहां हैं?

भारतीय राष्ट्र में राष्ट्रीयता के उद्भावक गांधी कहां हैं?

मैं तो इन प्रश्नों के पीछे पड़ने से परेशान हूं। मैं भी खोज रहा हूं। गांव-गांव खोज रहा हूं। गली-गली खोज रहा हूं। आप भी चाहें तो इस खोज में शामिल हो लें।

अगर ये प्रश्न आपको नाजायज लगें, नागवार लगें तो मुझे क्षमा करके आगे निकल जायें।

राष्ट्र निर्माता गांधी की एक सौ पचासवीं जयंती के अवसर पर मेरी अंजलि में फूल नहीं हैं, प्रश्न हैं। इन्हें ही मजबूरी में समर्पित करने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि और कुछ हो न हो मगर इतना जरूर हो कि गांधी हमारी स्मृति में, हमारी आस्था में जीवित बने रहें। उनके प्रति हमारी कृतज्ञता बची रहे। ❑

तलाश गांधी की

❑ गिरिराज किशोर

एक आम, डरपोक किस्म का आदमी जो बहुत अच्छा बोलने वाला भी नहीं था। वकालत में भी असफल। इतना फैशनेबल आदमी। वह इतना त्यागी और देश के लिए काम करने वाला बना। मुझे हमेशा लगता रहा कि ज़रूर उसने अपने तिरस्कार से ऊर्जा ग्रहण की, जिसके कारण वह अपने को इतना क़ाबिल बना पाया। इससे मुझे भी अपने को प्रेरित करने की ज़रूरत महसूस हुई।

मैंने पहले भारत के गांधी के बारे में लिखना शुरू किया था। लेकिन जब मैं दक्षिण अफ्रीका गया तो वहाँ हाशिम सीदात नाम के एक सज्जन ने मुझसे कहा- देखिए गांधी हमारे यहाँ तो जैसे खान से निकले अनगढ़ हीरे की तरह आया था, जिसे हमने तराशकर आपको दिया। आपको तो हमारा शुक्रिया अदा करना चाहिए। अगर आपको लिखना है तो इस गांधी पर लिखिए। उनकी बात ने मुझे प्रेरित किया तब दक्षिण अफ्रीका के गांधी पर लिखा।

जब आदमी कुछ सिद्धांत बना लेता है तो उनका पालन करना चाहता है। जैसे किसी ने त्याग को आदर्श बनाया तो उपभोग की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना चाहता है। गांधीजी तानाशाह नहीं थे। लेकिन उनके तरीके अलग थे। एक घटना बताता हूँ—

गांधी एक बार इटली के तानाशाह मुसोलिनी से मिलने गए। साथ में उनके सचिव महादेव देसाई तथा मीराबेन और मुसोलिनी का एक जनरल था, जिससे मुसोलिनी नाराज़ था। गांधीजी उसी जनरल के घर रुके थे। मुसोलिनी ने गांधी का स्वागत किया और सब लोग एक कमरे में गए जहाँ केवल दो कुर्सियां थीं। मुसोलिनी ने गांधी से बैठने को कहा। गांधी ने तीनों से बैठने को कहा। तो ये कैसे बैठें? मुसोलिनी ने फिर गांधी को बैठने को कहा। गांधी ने फिर तीनों से बैठने को कहा। तीन बार ऐसा हुआ। आखिरकार तीन कुर्सियां और मंगानी पड़ीं। तब सब लोग बैठे। तो यह गांधी का विरोध का तरीका था। कुछ लोग इसे डिक्टेटरशिप भी कह सकते हैं।

इसी तरह दूसरे विश्वयुद्ध में उन्होंने हिटलर को लिखा था कि आप युद्ध के लिए जिम्मेदार हैं और आपको इसे बंद करना होगा। मैंने इस पर हिटलर का जवाब भी देखा। उसने लिखा था—नहीं, ये लोग मुझ पर अकारण दोषारोपण कर रहे हैं। सच तो यह है कि वही लोग युद्ध के लिए जिम्मेदार हैं और आपको उनसे बात करनी चाहिए।

'पहला गिरमिटिया' लिखने के सिलसिले में मैंने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की। जब मैं वहां पहुंचा तो मेरी मुलाक़ात लता रेड्डी से हुई। गांधी और जवाहर लाल उनके हीरो रहे हैं। उनका कार्यालय उसी भवन में है जहाँ पहले रेलवे स्टेशन था। वहाँ से स्टेशन हटा दिया गया। केवल उस भवन को सुरक्षित रखा गया है। वह भवन चार मंजिला है। उसी भवन में भारतीय काउंसलेट जनरल का कार्यालय है। लता रेड्डी यहाँ की पहली काउंसलर जनरल हैं। उन्होंने उसी स्टेशन के भवन में अपना कार्यालय रखा। दरअसल गांधीजी सबसे पहले इसी स्टेशन पर उतरे थे। श्रीमती रेड्डी ने उस भवन के मालिकों से कहकर वहाँ इस आशय की पट्टी लगवाई है।

उसके बाद हाशिम सीदात से भेंट हुई। वह गांधीजी के बारे में काफ़ी जानकारी रखते हैं। उन्होंने मुझे बीचग्रोव पर वह स्थान दिखाया जहाँ पर गांधीजी का दुमंजिला मकान था। अब वहाँ कार-पार्किंग है। उसके सामने ही तत्कालीन प्रधानमंत्री का घर था। वह वहाँ से गांधीजी को देखा करते थे। सब कुछ बदल गया। केवल एक जगह है - हार्वे ग्रीन एक्का। यह एक फर्म थी। वहीं पर ज़मीन में उसके नाम का एक पत्थर लगा है। इसी कंपनी का गांधीजी ने सबसे पहले मुकदमा लड़ा था।

हाशिम के साथ सबसे पहले हम गांधीजी का विला देखने गए। जहाँ अब भवन बने हैं, वहाँ मैदान था। गांधीजी का मकान हार्वे ग्रीन एक्का के भवन के पीछे बीचग्रोव लेन में था। ग्रीन हार्वे का जहाँ भवन है, उसके बराबर में दादा अब्दुल्ला की बिल्डिंग थी। गांधीजी अपने घर से चलकर अब्दुल्ला के घर आते थे। वहाँ से वह जब कभी नेटाल इंडियन कांग्रेस की मीटिंग होती थी, तो ग्रे-स्ट्रीट से होते हुए पाइन स्ट्रीट जाते थे। वहाँ पर कांग्रेस का ऑफिस था। तब इतनी सड़कें नहीं थीं। मैदान के बीच से होकर जाते रहे होंगे। अब तो पूरी सड़क तय करके लंबा चक्कर लगाना पड़ता है। बरुक स्ट्रीट सिमेट्री भी देखी जहाँ गांधीजी के बचपन के दोस्त शेरू मेहताब की कब्र है।

हम गांधीजी की दूसरी यात्रा का अंदाज़ लगाने के लिए निकले। सीदात के पास कुछ चित्र थे। उन्होंने दिखाया। उन चित्रों से उस ज़माने के मजदूरों के वस्त्रों व रहन-सहन का पता चलता है। गांधीजी स्वयं उन लोगों के बीच कुर्ता और लुंगी पहनते थे। वहाँ से हम लोग पहले बीच ग्रोव से चले, वेस्ट स्ट्रीट से होते हुए मर्क्युरी स्ट्रीट तक गए। वहाँ गांधीजी का दफ्तर था। अब वहाँ उस भवन को गिराकर बहुमंजिली इमारत बन रही थी। वैसे ही जैसे उनके घर के गिर जाने पर वहाँ पार्किंग क्षेत्र बन गया है। वहीं वे मुकदमों की तैयारी करते थे। वहाँ से वे कोर्ट रूम जाते थे। कोर्ट रूम, सिटी हॉल (जहाँ मेयर बैठते हैं) और थाना लगभग बराबर है। कोर्ट रूम में अब हिस्ट्री म्यूजियम है। जहाँ थाना था, वहाँ वुडवेड गार्डेंस हैं। इसी थाने में गांधीजी दो दिन रहे थे। जब वे दोबारा परिवार के साथ डरबन वापस लौटे थे और उन पर गोरों का आक्रमण हुआ था तो एलेक्जेंडर नाम के पुलिस अफ़सर ने उन्हें बचाया था। तब उन्हें दो रोज़ थाने में ही सुरक्षा हेतु रखा गया था।

उसके बाद हम लोग पीटर मैरिट्जबर्ग स्टेशन गए। वहीं पर गांधीजी को ट्रेन से फेंका गया था। संभावना यही है कि जो बेंच प्रवेश द्वार के सामने गड़ी हुई है, उसी के पास उन्हें फेंका गया होगा। क्योंकि फर्स्ट क्लास वहीं आता है। वहाँ से उतरकर कुछ देर तक गांधीजी उसी बेंच पर बैठे रहे थे। हाशिम को छोटी-छोटी तफ़सील मालूम है। वहाँ से हम सुप्रीम कोर्ट के भवन गए। वह पुराना सुप्रीम कोर्ट का भवन है। सुप्रीम कोर्ट की इसी बिल्डिंग में गांधी को एडवोकेसी में प्रविष्ट किया गया था।

वहां से हम फीनिक्स सेटलमेंट गये। इला गांधी भी वहीं आ गई थीं। इला जी गांधीजी की पौत्री और मणिलाल गांधी की बेटी हैं। वहाँ उनका बहुत सम्मान है। फीनिक्स सेटिलमेंट में चारों तरफ़ 'काले' बसे हुए हैं। गांधीजी की कुटिया तोड़ डाली गई है। प्रेस की बिल्डिंग भी टूट गई है। जो कुआं वहाँ था, उसे बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। वह कुआं गांधीजी ने बनवाया था। फीनिक्स सेटिलमेंट अब उसका पुनर्निमाण करना चाहता था। ❑

जब गांधी से मिलने पहुंचे चार्ली चैप्लिन

❑ ओम थानवी

महात्मा गांधी से मिलने के बाद चार्ली चैप्लिन के ये शब्द थे, 'अंततः जब वे (गांधी) पहुंचे और अपने पहनावे की तहें संभालते हुए टैक्सी से उतरे तो उनके स्वागत में जयकारे गूंज उठे. उस छोटी, तंग, गरीब बस्ती में क्या अजब दृश्य था जब एक बाहरी शख्स एक छोटे-से घर में जन-समुदाय के जयघोष के बीच दाखिल हो रहा था.'

इस चित्र को ध्यान से देखिए, यह लंदन की घटना है जब चैप्लिन मिले थे महात्मा से. उस घड़ी की तस्वीर, उस खिड़की से, जहां से गांधीजी की प्रतीक्षा कर रहे चार्ली चैप्लिन नीचे का कोलाहल सुन यह दृश्य निहारने उठ खड़े हुए थे. भारत तो भारत, इंग्लैंड में भी गांधीजी की प्रतिष्ठा का यह आलम था! अफ्रीका से भारत लौट आने के बाद गांधी केवल एक बार विदेश यात्रा पर गए, 1931 में गोलमेज वार्ता में शरीक होने. वार्ता तो विफल रही, लेकिन अंग्रेजों का दिल उन्होंने बहुत जीत लिया.

लंदन में गांधीजी किसी ऊंचे होटल में नहीं रुके, पूर्वी लंदन के पिछड़े इलाके में सामुदायिक किंग्सले हॉल (अब गांधी फाउंडेशन) के एक छोटे-से कमरे में ठहरे. जमीन पर बिस्तर लगाया. लंदन की ठंड में भी अपनी वेशभूषा वही रखी—सूती आधी धोती, बेतरतीब दुशाला और चप्पल. वे कोई तीन महीने वहां रहे. यह तस्वीर तभी की है. चार्ली चैप्लिन हॉलीवुड में चरम प्रसिद्धि बटोर कर अपने वतन लौट आए थे. वे राजनेताओं से राजनीति की चर्चा में रुचि लेने लगे थे. अपनी फिल्म 'सिटी लाइट्स' के प्रीमियर के लिए वे लंदन में ही थे.

किसी ने चैप्लिन को सुझाया कि गांधीजी से मिलना चाहिए. उन्होंने गांधीजी को पोस्टकार्ड लिख दिया.गांधीजी जब लंदन में

अपनी डाक पढ़ रहे थे, तब उनकी मेजबान मुरिएल लेस्टर ने उन्हें चैप्लिन के बारे में विस्तार से बताया. यह भी कहा कि राजनीति में आपका और कला की दुनिया में चैप्लिन का रास्ता जुदा नहीं. गांधीजी ने मुलाकात की मंजूरी दे दी. चैप्लिन को कैनिंग टाउन में डॉक्टर चुन्नीलाल कतियाल के यहां 22 सितंबर, 1931 की शाम का वक्त दिया गया, जहां उस रोज गांधीजी को जाना था. गांधीजी से मुलाकात का दिलचस्प जिक्र चैप्लिन ने अपनी आत्मकथा में विस्तार से किया है; नेहरू और इंदिरा गांधी के साथ प्रवास का भी.गांधीजी से मिलने को डॉ. कतियाल की बैठक में चैप्लिन को घेरकर बैठी एक युवती को एक दबंग महिला (संभवतः सरोजिनी नायडू) ने डपट कर चुप कराया, 'क्या अब आप इनको गांधीजी से बात करने देंगी?'

कमरे में 'सन्नाटा' छा गया. गांधीजी चैप्लिन की ओर देख रहे थे. चैप्लिन लिखते हैं कि गांधीजी से तो मैं उम्मीद नहीं कर सकता था कि वे मेरी किसी फिल्म पर बात शुरू करेंगे और कहेंगे कि बड़ा मजा आया; 'मुझे नहीं लगता था कि उन्होंने कभी कोई फिल्म देखी भी होगी.' सो चैप्लिन ने अपना 'गला साफ किया' और कहा कि मैं स्वाधीनता के लिए भारत के संघर्ष के साथ हूं, पर आप मशीनों के खिलाफ क्यों हैं, उनसे तो दासता से मुक्ति मिलती है, काम जल्दी होता है और मनुष्य सुखी रहता है? गांधीजी ने मुस्कुराते हुए शांत स्वर में उन्हें अहिंसा से लेकर आजादी के संघर्ष का सार पेश कर दिया. गांधीजी ने कहा- आप ठीक कहते हैं, मगर हमें पहले अंग्रेजी राज से मुक्ति चाहिए. गांधीजी ने आगे कहा कि मशीनों ने हमें अंग्रेजों का और गुलाम बनाया है. इसलिए हम स्वदेशी और स्व-राज की बात करते हैं. हमें अपनी जीवन-शैली बचानी है.

अपनी बात का गांधीजी ने और खुलासा यों किया - हमारी आबोहवा ही आपसे बिलकुल जुदा है. ठंडे मुल्क में आपको अलग किस्म के उद्योग और अर्थव्यवस्था की जरूरत है। खाना खाने के लिए आपको छुरी-कांटे आदि उपकरणों की जरूरत पड़ती है, सो आपने इसका उद्योग खड़ा कर लिया, पर हमारा काम तो उंगलियों से चल जाता है. हमें अनावश्यक चीजों से भी आजादी की दरकार है. चर्चा में चैप्लिन आजादी को लेकर गांधीजी की अनूठी दलीलों, उनके विवेक, कानून की समझ, राजनीतिक दृष्टि, यथार्थवादी नजरिए और अटल संकल्पशक्ति से अभिभूत हो गए. पर तब चैप्लिन सहसा हैरान रह गए जब गांधीजी ने एक मुकाम पर कहा कि माफ कीजिए, हमारी प्रार्थना का वक्त हो गया. हालांकि उन्होंने चैप्लिन को विनय से यह भी कहा कि आप चाहें तो यहां रुक सकते हैं. चैप्लिन रुक गए. चैप्लिन ने सोफे पर बैठे-बैठे देखा—गांधीजी और पांच अन्य भारतीय जन जमीन पर पालथी मार कर बैठ गए और रघुपतिराघव राजा-राम, पतित-पावन सीता-राम; वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे... समवेत स्वर में गाने लगे. चैप्लिन को विचार-सम्पन्न गांधीजी के 'गान-वान' में ऐसे मशगूल हो जाने में अजीब 'विरोधाभास' ही अनुभव हुआ. उन्हें लगा कि महात्मा में उन्होंने जो 'राजनीतिक यथार्थ की विलक्षण सूझ' देखी थी, वह इस समूह-गान में मानो तिरोहित हो गई. मगर क्या सचमुच? शायद यही तो वह सांस्कृतिक भेद था जिसे क्या तो चैप्लिन और क्या तो अंग्रेज, गांधीजी अंत तक इसकी समझ, और प्रेरणा, हम भारतवासियों तक को देते रहे! ❑

गांधी जी महात्मा क्यों!

❑ केशव शरण

प्रश्न है कि क्या आज तक दुनिया में किसी क्रांतिकारी और राजनीतिज्ञ को महात्मा या संत कहा गया? किसी को तो नहीं! फिर मोहनदास करमचंद गांधी को ही महात्मा क्यों कहा जाता है? अगर गांधी जैसे राजनीतिक व्यक्तित्व को महात्मा कहा जाता है तो उनकी राजनीति की उदात्तता के कारण जो मानवता के इतिहास में सबसे अलग और सर्वोच्च है। अपने विरोधी से भी प्रेम-साधनों की पवित्रता।सत्य के लिए मर-मिटने का हौसला। और अहिंसा का मार्ग। उनसे पहले क्या किसी ने संघर्ष और राजनीति का ऐसा तरीक़ा सोचा था? क्या उनसे पहले कोई परिवर्तनकामी क्रांतिकारी लड़ाई के ये उपकरण लेकर संघर्ष के मैदान में उतरा था? क्या किसी को विश्वास था कि अहिंसक संघर्ष से साम्राज्यवाद को हराया जा सकता है? लेकिन महात्मा गांधी ने इसे संभव करके सारे विश्व को दिखा दिया।

आज देश आज़ाद है तो इसकी आज़ादी के पीछे मोहनदास करमचंद गांधी की अद्भुत नेतृत्व क्षमता और अदम्य संघर्षों की महान भूमिका रही है। अपने संघर्षों में उन्होंने अहिंसा को कभी नहीं त्यागा। उनके संघर्षों का लक्ष्य न सिर्फ देश की राजनीतिक दासता से मुक्ति थी, बल्कि हर तरह की गुलामी से मुक्ति थी। अंतिम जन की उन्नति की चाह थी। हर तरह के शोषण, उत्पीड़न और भेदभाव से मुक्ति की कामना थी। हर एक को जीने का समान अधिकार और अवसर प्राप्त हो, इसका सपना था। देश से लेकर ग्राम और व्यक्ति की आर्थिक आत्मनिर्भरता की योजना थी। प्रकृति और पृथ्वी के संसाधनों की हिफ़ाज़त थी। पूरे देश के लिए अपनी एक भाषा थी जिसके वास्ते वे हिंदी की हिमायत करते थे। उन्हें नहीं चाहिए थी अंग्रेज़ों के बाद अंग्रेज़ी भाषा की गुलामी। न सिर्फ राजनीतिक, बल्कि भाषाई और सांस्कृतिक दासता से भी वे भारत को दूर रखना चाहते थे। उनका अपना स्वराज विधान था। इसके बावजूद उनमें पूरे विश्व के प्रति स्वागत- भाव था और समस्त मानवता के लिए प्रेम-संदेश। उनकी कल्पना थी परमाणु हथियार विहीन दुनिया। शोषण मुक्त संसार। साथ ही वे एक ऐसा भारत चाहते थे जिसमें जात-धरम के झगड़े न हों, सब प्रेम से सहयोगपूर्वक रहें।

हर मामले में गांधी जी की अपनी एक विशिष्ट सोच और मौलिक दृष्टि तथा कार्य शैली थी। अपने सोचे को कार्य रूप में बदलने का दृढ़ संकल्प और अटूट विश्वास व अदमनीय साहस था। उनके संघर्ष का पूर्व पक्ष दक्षिण अफ्रीका रहा हो या उत्तर पक्ष भारत, कहीं भी मानवता और नैतिकता की क़ीमत पर कोई समझौता नहीं, मूल्यों से हटकर किसी राजनीतिक सफलता की चाहत नहीं। साधनों की शुचिता के साथ प्राप्त सांघर्षिक सफलता ही काम्य। अन्यथा असफलता मंजूर और सतत संघर्ष ही स्वीकार। ऐसे थे गांधी!

अपने ऐसे अटल सिद्धांतों के साथ असाधारण संघर्ष और राजनीति करते हुए महात्मा गांधी ने विश्व को संघर्ष और राजनीति की सर्वथा नूतन और मानवतावादी दृष्टि दी। संघर्ष में विरोधी को भी सम्मान और हानि न पहुंचाने का विचार अपनी उदात्तता और सफलता के साथ पहली बार मानव-इतिहास में उपस्थित हुआ और पूरे विश्व को चमत्कृत कर गया। आज़ाद भारत की राजनैतिक व्यवस्था में सभी धर्मों का आदर और धर्मनिरपेक्ष राजव्यवस्था जिसमें सभी के लिए भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति की अनुकूल परिस्थितियां हों, गांधी जी की सोच थी।

महात्मा गांधी के नितांत लौकिक संघर्ष और राजनीतिक लक्ष्यों ने जिस नैतिकता और आध्यात्मिकता का वहन किया और जिस प्रतिरोधक क्षमता और रचनात्मकता का दिग्दर्शन कराया, उसके बाद उनके लिए महान नेता, महान जननायक आदि विशेषण अर्थहीन हो गये। एक ही विशेषण उनके लिए उपयुक्त था और वह था- महात्मा। विश्व के महानतम वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा कि आगे आने वाली पीढ़ियां इस बात पर आश्चर्य करेंगी कि हाड़-मांस का ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी इस धरती पर था।

लौकिक राजनीति के इस महात्मा ने अपने नेतृत्व में असाधारण संघर्ष चलाते हुए भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करा दिया। उसके बाद बंटवारे की आग में जल रहे देशवासियों को शांति का संदेश देते हुए गोलियां खाकर शांति से प्राण भी त्याग दिए। महात्मा गांधी का बलिदान दुनिया के महानतम बलिदानों में से है। उनसे महात्मा का पद कोई नहीं छीन सकता। वे एक अमर महात्मा हैं, उन्हें कोई नहीं मार सकता। विडम्बना है कि ये सब जानते हुए भी रोज़ उनकी हत्या के प्रयास हो रहे हैं। पृथकतावादी राजनीति आज उन्हें मारने पर उतारू है। उनके बारे में भ्रमात्मक सूचनाओं और चरित्र हत्या के कथानकों का एक भयानक कुचक्र रचा जा रहा है। धर्म की राजनीति उनसे महात्मा की उपाधि छीन लेना चाहती है। महात्मा गांधी के जनमानस में बने रहने तक जनमानस को किसी के राजनीतिक स्वार्थों के अनुरूप गढ़ा नहीं जा सकता है।

गांधी को राष्ट्रीय, ऐतिहासिक और वर्तमान परिदृश्यों से बाहर करने की साजिशें कम नहीं हो रही हैं। और आश्चर्य है कि इसी के साथ गांधी जी की ज़रूरत भी ख़ूब महसूस की जा रही है। आज देश की राजनीति दिशा खो चुकी है। आज उसका लक्ष्य अंतिम जन तक लाभ पहुंचाना नहीं है। मानवीय शोषण पर रोक लगाना उसकी मंशा नहीं है। भेदभाव वह मिटाना नहीं चाहती। देश और समाज के सशक्त और संपन्न वर्ग की सेवा और सुरक्षा ही उसका मक़सद है। अंतर्विरोधों को हवा और जड़तावाद को बढ़ावा देना आज उसके कार्यक्रमों में है। विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन उसके लक्ष्य में है। उसका लक्ष्य है जन मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाना और लोगों को भावनात्मक मुद्दों पर लड़ाकर अपनी राजनीति करना। जनता को पूंजीपतियों के प्रचार तंत्र द्वारा बरगलाकर उसका वोट प्राप्त करना और फिर उसे ही किनारे कर देना। मतलब कि आज जो हो रहा है, वह सब महात्मा गांधी के सिद्धांतों के खिलाफ़ तथा उनके राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दर्शन के विरुद्ध हो रहा है। ❑

विनोबा - 125

धाम नदी के दोनों तरफ

(विनोबा के 125वें जयंती वर्ष पर सेवाग्राम में हुए समारोह की रिपोर्ट)

सेवाग्राम पुण्यगर्भा भूमि है। यहां की आबोहवा में ऋषिकल्प दिव्यता का प्रभाव है। इस पुण्य भूमि पर जिनके चरण पड़े, उन महामानवों में गांधी के बाद विनोबा का नाम आता है। धाम नदी के दोनों तरफ मात्र दस किलोमीटर के अंतराल पर बसे सेवाग्राम और पवनार के दो आश्रमों ने सत्य, प्रेम, करुणा, अहिंसा, सत्याग्रह, श्रमनिष्ठा और अध्यात्म के जो वितान रचे, उसने साम्राज्यवादी शासकों के मन को छुआ। उसके बाद का सबकुछ भारत के गौरवशाली इतिहास का हिस्सा है। इस बार ग्यारह सितंबर को हम सेवाग्राम में थे। विनोबा के 125वें जयंती वर्ष के उद्घाटन का अवसर था और स्थान था ऐतिहासिक महादेव भाई भवन। यह वही भवन है, जो गवाह है 12 फरवरी 1948 का, जब विनोबा भी थे और तत्कालीन भारतीय राजनीति के सभी बड़े राजनेता भी। सवाल था कि गांधी तो चले गये। अब आगे क्या? उसी अधिवेशन में चली बहसों और बनी योजनाओं का परिपाक था सर्व सेवा संघ और सर्वोदय समाज।

उद्घाटन व विषय प्रवेश- इसी भवन में जुटे थे हम सब विनोबा के अवतरण दिवस पर उनकी पावन स्मृतियों को प्रणाम करने। मंचासीन अतिथियों ने विनोबा के चित्र को सूत की माला समर्पित की, साथी प्रशांत गूजर ने 'जयजगत, जयजगत, जयजगत पुकारे जा' गीत गाया। आमंत्रित अतिथियों का शाल, चरखा व विनोबा द्वारा लिखी पुस्तक 'मुहब्बत का पैगाम' देकर अभिनंदन किया गया। सत्र का संचालन कर रहे थे शेख हुसैन और स्वागत उद्बोधन के लिए माइक पर थे सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही। संत के संतत्व का अभिषेक करते हुए महादेव भाई ने विषय को व्यापक परिप्रेक्ष्य में सामने रखा। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान (ए), बर्मा (बी) और सीलोन (सी) के बीच बसे विशाल भूखंड को एकाकार करने की विनोबा की कल्पना हमें हमारी विरासत के रूप में मिली थी। लेकिन एक तरफ एकाकार होने का यह दर्शन था तो दूसरी तरफ दुनिया में हथियारों के व्यापारी हैं, जो देशों को देशों से लड़ाये रखना चाहते हैं ताकि दुनिया की कीमत पर ही सही, मोटे मुनाफे का उनका धंधा चलता रह सके।

एकमात्र रास्ता : विनोबा और गांधी-

इस समारोह के मुख्य अतिथि थे अखिल भारत मराठी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. श्रीपाल सबनीस। उन्होंने अपने उद्बोधन से पहले विनोबा की दो पुस्तकों 'नये भविष्य की ओर' तथा 'अहिंसा की तलाश' का लोकार्पण किया। पराग चोलकर व कालिन्दी बहन द्वारा संपादित इन दो पुस्तकों से ही मुख्य अतिथि ने कुछ सूत्र और संदर्भ उठाये और अपने विचार सभा के सामने रखे। उन्होंने कहा कि अपने तत्त्वज्ञान से विनोबा ने समर्पित भूमिका का निर्वाह किया। उनका हिन्दू धर्म गोलवलकर के हिन्दू धर्म से अलग था। हिन्दू धर्म और उसके कथानकों तथा दर्शन की विनोबा की व्याख्याएं अनूठी थीं। बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया को बचाने का एक मात्र रास्ता विनोबा और गांधी से होकर जाता है। धर्म की रूढ़ियों को नकारते हुए अपना जनेऊ तक जला देने वाले विनोबा साधन शुचिता की कसौटी निरहंकारिता को मानते थे। वे स्वयं ब्राह्मण होकर भी अपने हाथ से ग्रामीणों का पाखाना साफ करते थे। लगभग सभी धर्मों की विवेचना अत्यंत सरल भाषा में प्रस्तुत करने वाले विनोबा के ऋषितत्व को प्रणाम करते हुए हम उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि निवेदित करते हैं।

विज्ञान और अध्यात्मक का संगम- वयोवृद्ध सर्वोदय नेता तपेश्वर भाई ने विनोबा के साथ के अपने अनुभव सुनाए। उन्होंने बताया कि भूदान के सिलसिले में जब सहरसा में बाबा का पड़ाव हुआ तो इतनी जमीन मिली कि दानपत्र लिखने वालों के हाथ थक गये। इस क्रांति की सफलता का श्रेय वे हम लड़कों की वानर टोली को देते थे। हमारा सीना चौड़ा हो जाता था। डॉ. सोमनाथ रोड़े ने विनोबा को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भारत की विषमता मिटाने के लिए गांधी और विनोबा ने जो उद्यम किये, उस रास्ते पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। बाबा ने विज्ञान को अहिंसा और अध्यात्म से जोड़ने का संदेश दिया था। निसर्ग के साथ सामंजस्य बनाकर चलने का संदेश देने वाले गांधी और विनोबा की सोच सच्चाई और इंसानियत की सोच थी।

लहर पैदा करने की जरूरत- आदित्य पटनायक ने बताया कि जेपी और बाबा का सान्निध्य मुझे मिला था। जिस आदर्श, जिस तप और जिस कृति से देश व समाज को विनोबा ने दिशा दी, उन पड़ावों से होकर गुजरेंगे तभी हमें हमारी मंजिल मिलेगी। कितना भी बड़ा तालाब हो, किन्तु एक छोटी सी कंकरी भी उसमें लहर पैदा कर देती है। आज जरूरत है देश में उसी तरह के गिलहरी प्रयत्नों से लहर पैदा करने की। इनके अलावा इस सत्र को संबोधित करने वालों में भूदानी राम सिंह राजपूत, श्रीकांत और वयोवृद्ध सर्वोदय नेता सत्यपालजी भी शामिल थे। प्रशांत गूजर ने इस सत्र के प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रवाद से जयजगत की ओर- दूसरे सत्र का विषय रखा गया था 'राष्ट्रवाद से जयजगत की ओर'। इस सत्र के मुख्य वक्ता थे सर्वोदय जगत

के संपादक मंडल के वरिष्ठ साथी और पत्रकार रमेश ओझा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद कोई बहुत पुरानी और शास्त्रीय अवधारणा नहीं है। लगभग 1780 के आसपास इसकी चर्चा और इस पर बहस की शुरुआत हुई। दरअसल राष्ट्रवाद का मूल ही शोषण में है और इसीलिए यह अशास्त्रीय अवधारणा भी है, अन्यथा हमारी शास्त्रीयता तो हमें विश्वबंधुत्व का सबक सिखाती है। पश्चिम में राष्ट्रवाद की शुरुआत ही शोषण से हुई। जातियों, समुदायों और विभिन्न भगवानों के बीच बंटे हुए समाज में जब दयानंद सरस्वती का प्राकट्य हुआ तो सबसे पहले उनको लगा कि लोगों में चेतना निर्माण के लिए राष्ट्रवाद की ओर चलना होगा। इसी प्रयत्न में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। लेकिन यह अंशतः पश्चिमी राष्ट्रवाद की नकल थी। पश्चिमी राष्ट्रवाद को जस का तस अपना लेने का ख्याल सावरकर के दिमाग की उपज थी। उसके मूल में यह धारणा थी कि जिस समाज की बहुसंख्या है, देश की सीमा के अंदर उसका प्रभुत्व भी होना चाहिए। सावरकर के अनुसार जिस जमीन पर हम रहते हैं, उसके प्रति प्रेम राष्ट्रवाद नहीं है। बहुसंख्यक का अल्पसंख्यक पर शासन राष्ट्रवाद है। इसीलिए राष्ट्रवाद की धारणा कृत्रिमता पर आधारित है। विनोबा का काम जोड़ने का था। उन्होंने बहुसंख्यकवाद के खिलाफ कठोर और स्पष्ट चेतावनी दी। गांधी की विचारधारा, जो विनोबा के जरिये आज इस मुकाम तक पहुंची है, वह कमजोर नहीं हुई है, कमजोर दरअसल हमलोग हुए हैं।

समापन उद्‌बोधन- मुख्य वक्तव्य के बाद हुई खुली चर्चा में अविनाश काकड़े, राजेन्द्र कुम्भज तथा कालिका सिंह ने अपने विचार रखे। सर्व सेवा संघ प्रकाशन के संयोजक अरविन्द अंजुम ने समापन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि जब हम राष्ट्र कहते हैं तो इससे फौजी सरकार और आतंक जैसी एक झलक मिलती है। जबकि देश की भावना में एक राग है, संगीत है, एक झनकार है। देश में एक रचाव है, एक बसाव है, मिट्टी की एक महक है जो हमारी पहचान है। यूरोप के देशों में समाज से धर्म के प्रभाव को कम करने के लिए क्रांतियां हुईं। और हम आप वहीं जाने के लिए बेताब हैं। ऐसी देशभावना जो विश्व के हित के विरोध में न हो, वही असली देशप्रेम है। अब तो हम राजनीति में भी राष्ट्रवाद का कुप्रभाव देख रहे हैं। राजनीति जब धर्म और व्यापार से जुड़ जाती है तो बेहद खतरनाक हो जाती है। राष्ट्रवाद के सहारे विश्वगुरु होने का दर्प एक प्रकार का सांस्कृतिक साम्राज्यवाद है।

–प्रेम प्रकाश

धारावाहिक

जब बापू गिरफ्तार हुए

❑ **गिरिराज किशोर**

पहला गिरमिटिया जैसा चर्चित उपन्यास प्रस्तुत कर चुके गिरिराज किशोर ने अब बा पर कलम उठायी है। बा पर कुछ भी लिखना बहुत कठिन था। उनके बारे में उपलब्ध जानकारियां नहीं के बराबर हैं। 'पहला गिरमिटिया' की सामग्री जुटाने में उन्हें कोई दो हजार पुस्तकों से मदद मिली थी। और 'बा' उपन्यास लिखते समय मुश्किल से दो पुस्तकें सामने थीं। वे उन सब लोगों से मिले, जिन्हें कस्तूरबा के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी थी और उन जगहों पर गये, जहां बा ने थोड़ा या बहुत समय बिताया था। इस तरह बनी यह कथा, यह इतिहास बा के अलावा खुद बापू के दो और रूपों को भी सामने रखता है–पति और पिता का रूप। प्रस्तुत है 'बा' का अगला अंश, जो बा-बापू : 150 के अवसर पर क्रमशः प्रकाशित हो रहा है। –सं.

बा देवदास और लक्ष्मी के घर ठहरी। सुशीला दिन में दो-तीन बार आकर देख जाती थी। स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हुआ। पोता-पोती के साथ बा को अच्छा लगता था। ठीक होते ही बा को आश्रम की याद सताने लगी। सादा जीवन, संवासियों की चहल-पहल, सवेरे-शाम बापू की प्रार्थना...देवदास के घर में ऐसा कुछ नहीं था। एक रोज बा ने सुशीला से पूछा, 'क्या मैं कुछ दिन तुम्हारे होस्टल में रह सकती हूं? हम दोनों सेवाग्राम की तरह सवेरे-शाम प्रार्थना करेंगे।' सुशीला ने हामी भर दी।

गर्मी के दिन थे। दिल्ली की गर्मियों में सूखापन होता है। होस्टल इतना गर्म था कि बा रात में सो नहीं पाती थी। कमरा ठंडा करने के लिए कमरे में पानी भरकर पूरी रफ्तार पर पंखा खोलना पड़ता था। उसका नतीजा हुआ कि बा को ब्रॉन्कल निमोनिया हो गया। फिर देवदास के घर जाना पड़ा। कुछ दिन सघन देखभाल के बाद तबीयत कुछ संभली। उन दिनों बा की तबीयत के बारे में जानने के लिए लगभग रोज बापू के तार आते थे। बीच-बीच में बा के नाम बापू के पत्र भी आते रहते थे। बा उन्हें सुनकर अपने तकिये के नीचे रख लेती थी। कोई पूछता था तो लजा जाती थी। लेकिन जब मौका मिलता था तो चश्मा निकालकर, नये आये पत्र का एक-एक शब्द जोड़-जोड़कर पढ़ती थी। बापू के पत्रों ने ही जीवन दान दिया था। कहते हैं, बीमारी में दवा तो विकार खत्म करती है पर मनोबल अपने सबसे अधिक आत्मीय की चिन्ता से बढ़ता है। बा ठीक होते ही सेवाग्राम जाने के लिए उतावली हो उठी। देवदास ने बा को लक्ष्मी और तीनों बच्चों के साथ भेजा। बा वहां पहुंचते ही दैनंदिन कामों में व्यस्त हो गयी। इतनी कमजोरी के बावजूद बा का उत्साह चकित करने वाला था।

कुछ ही दिन बाद बापू को हिन्दू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने की दृष्टि से नार्थ फ्रन्टियर जाना था। बा ने भी उनके साथ जाने का मन बना लिया। बापू ने स्वास्थ्य की बात उठायी। बा का उत्तर था, 'हम दोनों मिलकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अधिक काम कर सकते हैं। आप मर्दों के बीच काम करें, मैं औरतों को संभालूंगी।'

बापू हंसकर बोले, 'तुम भी पूरी राजनीतिज्ञ हो गयी हो।'

बा ने उलटकर जवाद दिया, 'आपके सामने राजनीतिज्ञ कहां ठहर सकते हैं। यह तो प्रेम की गैल है।'

बापू ने कहा, 'फिर तो सुशीला भी चलेगी, तुम्हारी तबीयत वही संभाल सकती है।'

बा लौटकर और भी अधिक स्वस्थ महसूस करने लगी थी। आश्रमवासियों के साथ-साथ बा पोता-पोती की देखभाल करती थी। पोता-पोती के कारण उन्हें अच्छा लगता था। उनके लिए हलवा बनाती थी। और जो पसंद होता था वह भी सब बनाती थी। रसोई के काम में भी उनकी मदद लेती थी। जब शाम को उन्हें कहानी सुनाती थी तो बरामदे में भीड़ लग जाती थी। बा की आवाज सुरीली और मन को छूने वाली थी। बच्चे उनके एक-एक शब्द को ध्यान से सुनते थे।

दूसरे विश्वयुद्ध की स्थिति बनने लगी थी। बापू की व्यस्तता भी बढ़ गयी थी। बापू जब शाम को टहलने जाते थे तभी बच्चों को उपलब्ध होते थे। वे उनके हर सवाल का जवाब देते थे। बच्चों के पास केवल सवाल होते हैं,

न उत्तर होते हैं न ज्ञान होता है। बच्चे दिन में अगर उनके पास जाकर सवाल पूछते थे तो बापू उनके होठों पर उंगली रख देते थे। दूसरों से बात जारी रखते थे।

जब दूसरे विश्वयुद्ध की चर्चा चालू हुई तो मणिलाल की पत्नी सुशीला और बच्चे आश्रम में ही थे। वातावरण में युद्ध का तनाव था पर आश्रम में सबके चेहरों पर सहजता थी। मणिलाल दक्षिण अफ्रीका में थे इसलिए विश्वयुद्ध के कारण बदलते हालात को देखते हुए सुशीला और बच्चों को वापस लौटना पड़ा। सुशीला के मन में बा और बापू की स्मृति जिस रूप में समा गयी थी, उसकी अभिव्यक्ति इंडियन ओपीनियन में सुशीला द्वारा इस रूप में प्रकट हुई—

'...एक दिन बापू ने बा को खिजाने के लिए कहा कि 'तुम इस आश्रम को छोड़कर हमारे बेटों के आरामदेह बंगलों में उनकी पत्नियों और अपने पोते-पोतियों के साथ क्यों नहीं रहती? आराम से भी रहोगी और बहुओं पर हुकूमत करने को भी मिलेगा।' फिर घूमकर कहा, 'सुशीला, तुम्हें हर वक्त बा की सेवा करते देखता हूं, ऐसी तुम्हें क्या रिश्वत दे दी है?

मैंने भी उसी शैतानी भरे अंदाज में कहा कि 'बापू, आपकी सेवा करके तो मैं कुछ हाथ से कते धागे पाने का सौभाग्य प्राप्त करूंगी, लेकिन बा से बहुत कुछ मिलेगा।' बापू जोर से हंसे और चले गये।

बाद में जब मैं सामान बांध रही थी, बा मेरे लिए विदाई के उपहारस्वरूप हाथ से कते और बुने सूत की बहुत मुलायम सफेद साड़ी लायी। बापू ने, मेरा चौंकाने वाला उपहार देखकर, बिना हार माने, शैतानी भरी मुस्कान के साथ कहा, 'तुम जानती हो, इस साड़ी का आधा सूत मेरे हाथ का कता हुआ है।'

वर्धा में आयोजित कार्यसमिति में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हो चुका था। गांधी अंग्रेजों को चेतावनी दे चुके थे, 'तुम जाओ, भारत को ईश्वर पर...तथाकथित अराजकता पर छोड़ दो।' विलियम ई फिशिर लाइफ मैगजीन के संपादक थे। वे रात के भोजन पर आमंत्रित थे। रात्रि भोज पर ही वे बा से पहली बार मिले थे। उन्होंने अस्वस्थ बा के बारे में हृदयस्पर्शी विवरण दिया है। उन्होंने लिखा है, 'बा उनके (गांधी) बराबर में बैठी थी। पूरी तरह झुर्रियों वाली, सिकुड़ी सी महिला। कुछ शक्तिवर्धक चीज खाती हुई। मुझे बताया गया कि वे बहुत बीमार थी। वह बीमारी के बाद पहली बार, एक लंबे अंतराल के बाद, दूसरों के साथ भोजन कर रही थी। उनके जितना सुंदर, समर्पित और दयालु चेहरा, मैं सोचता हूं, पहली बार देखा था। सहजता और सहिष्णुता उनकी झुर्रियों में झिलमिला रही थी।'

'भारत छोड़ो' का नारा देने के बाद, बापू का काफिला 2 अगस्त, 1942 को बंबई के लिए रवाना हो गया था। बा उनके साथ जाने योग्य हो गयी थी। सब लोग नेपियन सी रोड पर स्थित बिरला हाउस में ठहरे थे। इतने बड़े भवन में ठहरने के कारण बा को कोई कठिनाई नहीं हुई। सारा देश ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के निर्णय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। वे भी जो कांग्रेस के साथ थे और वे भी जो विरोध में थे। डॉ. सुशीला नैयर, बा की सबसे विश्वस्त चिकित्सक, अखबार पढ़कर और अफवाहें सुनकर चिन्तित थीं। 4 अगस्त को सरकार में काम करने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि गांधी और सब नेताओं को जल्द बंदी बना लिया जायेगा। आदेश हो चुके हैं। सुशीला, बापू और खासतौर से बा को लेकर, चिन्तित हो उठी। अपने डीन से छुट्टी लेकर पहली गाड़ी से बंबई के लिए रवाना हो गयी। जब वह बंबई पहुंची तो बापू और सुशीला के भाई प्यारे लाल बैठक कर रहे थे। सब लोग उसे इस तरह अचानक आया देखकर चकित रह गये।

सुशीला ने बताया 'मुझे पता चला है कि आप सब लोग गिरफ्तार होने वाले हैं, मैं पीछे नहीं रहना चाहती।'

बा परेशान हो गई, 'ये लड़ाइयां तो चलती रहेंगी, तू अपनी पढ़ाई में व्यवधान क्यों डालना चाहती है?'

बापू भी परेशान हो गये। वे अपने बारे में आश्वस्त थे कि उन्हें सरकार जल्दी बंदी नहीं बनायेगी। हालांकि 7 अगस्त को कांग्रेस के खुले अधिवेशन में उन्होंने देश को एक क्रांतिकारी मंत्र दिया था, 'मैं तुम्हें एक छोटा-सा मंत्र देता हूं...करो या मरो।' इस मंत्र में अहिंसा समाविष्ट थी। हम मर जायेंगे, मारेंगे नहीं।

9 अगस्त को सवेरे सब जागे तो महादेव भाई ने बताया कि वे रात भर नहीं सो पाये।

बापू ने कारण पूछा, 'क्यों?'

'रात भर फोन बजता रहा, लोग पूछ रहे थे कि आप (बापू) गिरफ्तार तो नहीं हो गये?'

'मुझे नहीं लगता कि सरकार इतनी मूर्ख है कि उस व्यक्ति को गिरफ्तार करेगी जो शांति बनाये रखने में सहायता कर रहा है।'

प्रातःकालीन प्रार्थना जैसे ही समाप्त हुई, एक नौकर ने महादेव से आकर बताया कि पुलिस उनसे बाहर मिलने का इंतजार कर रही है। महादेव भाई समझ गये कि अफवाह नहीं, बात सही है। कुछ देर बाद बाहर से आकर महादेव ने बापू से कहा, 'वे लोग आपको लेने आये हैं।'

बापू के अच्छा! कहने में आश्चर्य का पुट था। उन्होंने पूछा, 'हमारे पास कितना समय है?'

'आधा घंटा।'

'क्या सभी को ले जायेंगे?'

'नहीं, उनके पास आपका, मेरा और मीराबेन का वारंट है।'

'बा का...?'

'नहीं।' धीरे से कहा।

'तुम चलोगी?' बापू ने बा से पूछा।

'जैसा तुम कहोगे।'

'नहीं तुम बताओ।' महादेव भाई का बेटा नारायण चुपचाप सुन रहा था।

'तुम कहोगे तो...'

'नहीं, तुम्हारी क्या मर्जी है?'

'तुम बताओ, जो तुम कहोगे वही करूंगी।'

'तो फिर कल मेरा एक काम करो, कल मेरी जगह तुम जन-सभा में जाकर भाषण दो।'

बा चाहती थी कि बापू की देखरेख के लिए वह उनके साथ जाये। बापू का प्रस्ताव सुनकर वह एकदम शांत हो गयी। देश का काम पहले था। नारायण, महादेव भाई के पास से हटकर बा के पास जाकर खड़ा हो गया। बा को बापू से अलग होना अजीब लग रहा था। लेकिन वह समझ गयी थी, उसे क्या करना है। यह जेल जाने से बड़ा दायित्व है। बा ने आकाश की ओर आंखें उठाकर प्रार्थना की और मन ही मन कहा, 'मेरे पति को देश की आजादी के इस संघर्ष को आगे ले जाने की शक्ति देना, और मुझे भी...।'

महात्मा की गिरफ्तारी का समाचार देश में जंगल की आग की तरह फैल गया था। कस्तूरबा बीमारी के कारण आयी कमजोरी भूल चुकी थी। नया उत्साह आ गया था। नया काम, नया उत्साह। सवेरे से बा व्यस्त थी, लोगों से बातें कर रही थी, धीरज बंधा रही थी, जरूरी निर्देश दे रही थी। अपने पति की भूमिका में आ गयी थी। मन हल्का-सा तनावग्रस्त था। बा को कुछ पता नहीं था, उसके पति और उनके साथियों को पुलिस कहां ले गयी। पर अंदर से मजबूत थी।

शिवाजी पार्क में बापू को जनसभा को संबोधित करना था। बापू गिरफ्तार हो ही चुके थे। किसी ने आकर कहा, 'चारों तरफ जनता नजर आ रही है। बापू जेल में हैं, इन्हें कौन संबोधित करेगा?' *...क्रमशः अगले अंक में*

गतिविधियां एवं समाचार

गांधी-150

जयंती अभियान की अद्यतन रपट

पिछले तीन माह के भीतर गांधी-150 की दृष्टि से देशभर में कुछ हलचल होती हुई दिख रही है। सर्वोदय मंडलों के साथियों से गांधी 150 के अंतर्गत स्थानीय आयोजनों को ज्यादा व्यापक करने की दृष्टि से संपर्क किया जा रहा है।

इस सिलसिले में 17 से 18 जून 2019 तक अभियान के संयोजक अविनाश काकड़े ने मुम्बई का दौरा किया व वहां सर्वोदय के बुजुर्ग व युवा साथियों से इस विषय पर चर्चा की। 23 व 24 जून 2019 को विदर्भ के अकोला व वाशिम जिले में सर्वोदय मंडलों की बैठकें हुईं व समितियों का गठन किया गया। 29 जून 2019 को नागपुर में कांग्रेस सेवा दल के राज्यस्तरीय शिविर में उपस्थित साथियों के साथ आज की चुनौतियों व गांधी विचार की जरूरतों पर चर्चा व मार्गदर्शन किया गया।

11 जुलाई 2019 को महादेवभाई भवन, सेवाग्राम में सर्व सेवा संघ कार्यकारिणी व अन्य निमंत्रित साथियों के साथ गांधी 150 जयंती अभियान की विशेष बैठक का आयोजन किया गया।

20 जुलाई 2019 को बैंगलोर में बैठक का आयोजन गांधी भवन में किया गया। करीब 6 जिलों से 30-35 कार्यकर्ता इस आयोजन में उपस्थित थे।

25 जुलाई 2019 को मुंबई में बैठक का आयोजन किया गया था। महाराष्ट्र में अगले एक वर्ष के भीतर 125 तहसीलों में सर्वोदय मित्र मंडलों की इकाइयां बनाने का तय किया गया।

31 जुलाई 2019 को एर्नाकुलम (केरल) में बैठक का आयोजन गांधी भवन में किया गया। प्रदेश के 25-30 तहसीलों में सर्वोदय मित्र मंडलों की इकाइयां मजबूत करने का तय किया गया।

6 अगस्त 2019 को कटक (ओडिशा) में बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में 15-16 जिलों से 125-150 के आसपास कार्यकर्ता, साथी सहभागी हुए।

7 अगस्त 2019 को बंगाल में बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में 5 जिलों से 10-12 साथी सहभागी हुए थे। प्रदेश में 10-12 जिलों को सक्रिय करने पर चर्चा हुई।

8 अगस्त 2019 को हजारीबाग (झारखंड) में बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में 5-6 जिलों से 10-12 प्रमुख साथी सहभागी हुए थे। 10 अगस्त 2019 को राजघाट, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार व झारखंड के साथी सहभागी हुए थे। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही इसमें उपस्थित थे। अपने-अपने जिलों में नये साथियों को जोड़ने का कार्य करने की योजना बनी।

23-24 अगस्त 2019 को गोविन्दपुर, सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) में दो दिवसीय बैठक का आयोजन बनवासी सेवा आश्रम की ओर से किया गया था। इसमें वर्तमान परिस्थितियों में रचनात्मक कार्य व आंदोलन की हमारी दिशा क्या हो, इस पर चिन्तन हुआ। 7-8 राज्यों से करीब 50-55 कार्यकर्ता साथी सहभागी हुए।

25 अगस्त 2019 को कटनी (मध्य प्रदेश) में गांधी 150 जयंती अभियान के सिलसिले में कुछ बातें हुईं। मध्य प्रदेश में गांधी विचार को जानने वाले साथियों की व्यापक बैठक आगे करने पर चर्चा हुई।

31 अगस्त 2019 को बैठक का आयोजन लोंगोवाल व संगरूर में किया गया। युवाओं से गांधी विचार पर चर्चा हुई। हमने देखा कि नयी पीढ़ी में यदि विचार ठीक से समझाते हैं, तो लोग समझने की तैयारी दिखाते हैं। इस आयोजन में सर्व सेवा संघ के महामंत्री शेख हुसैन भी शामिल हुए।

–अविनाश काकड़े

सर्वोदय सेवक मानसिंह रावत स्मृति सम्मान

मान सिंह शशिप्रभा सर्वोदय सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टियों व सदस्यों की एक सभा ट्रस्ट के कार्यालय में हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि ट्रस्ट के संस्थापक सर्वोदय सेवक स्व. मान सिंह रावत, जो 'अंतर्राष्ट्रीय जमनालाल बजाज सम्मान 2015' से सम्मानित थे, की स्मृति में प्रतिवर्ष एक राज्य स्तरीय सम्मान दिया जायेगा। जो (महिला/पुरुष) सरलता, सादगी, ईमानदारी के साथ स्वच्छ छवि एवं सर्वोदय के कार्यों को आगे बढ़ाने में योगदान दे रहे हों, उन्हें 'स्व. सर्वोदय सेवक मानसिंह रावत स्मृति सम्मान' से नवाजा जायेगा। शशिप्रभा रावत की अध्यक्षता में हुई सभा का संचालन सचिव स्नेह दीप रावत ने किया।

इस अवसर पर सर्वोदय के कार्यों को गति देने हेतु नेत्र सिंह रावत को ट्रस्ट का सदस्य चुना गया। बा-बापू की 150वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2019 को विशेष कार्यक्रम का आयोजन गढ़वाल सर्वोदय मंडल की ओर से कोटद्वार में किया जायेगा, जिसमें वरिष्ठ सर्वोदयी आमंत्रित होंगे।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. बी. सी. शाह ने कहा कि स्व. मानसिंह रावत ने गांधी का जीवन जीया। वे सबके प्रिय थे, उनके विचारों की ज्योति जनहित में जलती रहनी चाहिए।

सभा को ट्रस्टी एवं गढ़वाल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल आर्य, डॉ. गीता रावत शाह, विनोद कुकरेती, विनय रावत, डॉ. शील शौरभ, मंजू रावत, मयंक कोठारी, दीपक कुकरेती, नेत्रसिंह रावत, श्रद्धा, के. पी. एल. खंतवाल, दर्शन लाल चौधरी आदि ने संबोधित किया।

–सुरेन्द्र लाल आर्य

गांधी चर्चा

उन्नाव सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में गांधी चर्चा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बच्चों के साथ संस्था के अध्यक्ष नसीर भाई, पूर्व अध्यक्ष राम शंकर भाई एवं जन स्वाध्याय अभियान के प्रदेश संयोजक रघुराज सिंह 'मगन' तथा प्रबंधक कमलेश कुमार पांडेय, अश्वनी कुमार पांडेय और शिक्षक हरिओम, योगेश, अमित, अजीत आदि मौजूद रहे। चर्चा के बाद गांधी ज्ञान परीक्षा का भी आयोजन हुआ. बच्चों ने गांधी से सम्बंधित अनेक प्रश्न पूछे और जवाब पाकर संतुष्ट हुए। कार्यक्रम में सुशोभित पांडेय, प्राची द्विवेदी, नीशू यादव, मो. फ़ैज़, दुर्गेश तिवारी आदि अनेक बच्चे शामिल रहे। ❑

ओडिसा में बा-बापू–150 और विनोबा–125

सर्व सेवा संघ भूदान ग्रामदान समिति के संयोजक गौरांग महापात्र के नेतृत्व में सुरभि चरिटेबल ट्रस्ट और ओडिसा भूदान कर्मचारी संगठन के संयुक्त आयोजन में बा-बापू-150 और विनोबाजी का 125वां जन्म दिवस 11 सितंबर को भुवनेश्वर में मनाया गया। ओडिसा के जाने माने भूदान सर्वोदय कर्मी पद्मश्री डॉ. तुलसी मुंडा के हाथों से समारोह का उद्घाटन हुआ.

ओडिशा के प्रसिद्ध भाषाविद तथा खण्डपड़ा निर्वाचन मंडल के विधायक प्रोफेसर सौम्य रंजन पटनायक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि हृदय परिवर्तन कि जरिये लाखों एकड़ जमीन भूमिहीन परिवारों को देना कोई छोटी बात नहीं थी. हम सब को पता है कि थोड़ी सी भूमि पर मालिकाना हक के लिए महाभारत हुआ था, लेकिन विनोबाजी ने अहिंसक तरीके से भूमि समस्या को हल करके दिखाया।

पद्मश्री तुलसी मुण्डा ने विनोबाजी का स्मरण करते हुए कहा कि बाबा का अवतार महावीर का अवतार था। संघर्ष और शांति का संगम थे विनोबा. भूदान से ग्रामदान, फिर ग्रामस्वराज के जरिये विश्व शांति की आशा रखने वाले विनोबा ने अपना सारा जीवन देश के लिए लगा दिया।

सम्मानित अतिथि के तौर पर विनोबाजी के साथ काम करने वाले प्रोफेसर कैलाश चंद्र आचार्य, उत्कल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष अधिवक्ता कैलाश चंद्र साहू , वरिष्ठ पत्रकार अक्षय कुमार साहू, सुधांशु शेखर महापात्र, दलित अधिकार कर्मी कालीकुमार सिंह, और शरत चंद्र आदि कार्यक्रम में शामिल थे।

राजस्थान में विनोबा–125 पर आयोजन

विनोबा गांधी के विचारों के प्रयोगकर्ता रहे। उन्होंने आचार्यकुल व ब्रह्मविद्या मंदिर की स्थापना की। देवनार कत्लखाने को बंद करवाने हेतु सत्याग्रह किया और गौ-सेवा को महत्त्वपूर्ण कार्य मानकर रचनात्मक कार्यों से जोड़ा। ये विचार गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र में 'विनोबा की 125वीं' जयंती पर अध्यक्ष आशा बोथरा ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर शशि त्यागी ने कहा कि सर्वोदय विनोबा की प्रेरणा है। 13 वर्ष तक सतत पदयात्रा के माध्यम से उन्होंने ग्रामदान, डाकुओं के आत्म समर्पण, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया। आचार्य मोहनकृष्ण बोहरा ने कहा कि विनोबा शिक्षा एवं साहित्य दोनों में दखल रखते थे। बुनियादी तालीम ही स्थायी ज्ञान का स्रोत है, उन्होंने इसे श्रम से जोड़कर आगे बढ़ाया। साहित्यकार दूसरों के दुख-दर्द को समझता और उसे अभिव्यक्त करता है। विनोबा में साहित्य की गुत्थियों को अपनी भाषा में सुलझाने की शक्ति थी। विनोबा ने समाज के बीच में रहकर साधना व सेवा का दीपक जलाया। डॉ. कमल मोहनोत ने कहा कि विनोबा के भजनों में ऐसा संगीत था जो व्यक्ति को भीतर तक प्रभावित करता था। विनोबा भाषाविद् एवं कवि भी थे। अपरिग्रह में रहना उनके स्वभाव में था। काजी मोहम्मद तैय्यब अंसारी ने कहा कि विनोबा को नया समाज बनाने के लिए रूहानी ताकत मिली थी। गांधी ने विनोबा को और विनोबा ने गांधी को आगे बढ़ने की उर्जा प्रदान की। डॉ. ओ. पी. टाक ने कहा कि विनोबा चिन्तक और कर्मशील थे। वे गांधी के प्रथम सत्याग्रही थे एवं अपनी रचना को स्वयं विसर्जित कर देते थे। धर्मेश रूटिया ने कहा कि विनोबा ने धर्म की परिभाषा दी एवं सद्विचारों को आत्मसात करने का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में भावेन्द्र शरद जैन ने कहा कि विनोबा बाल्यकाल से ही समर्पण भाव से इस मार्ग पर आगे बढ़े। 'बिनु श्रम खावे, चोर कहावे' कहकर उन्होंने श्रम की महत्ता, स्वावलंबन और स्वच्छता जैसे कार्यक्रमों पर बल दिया।

इस अवसर पर गांधीवादी विचारक एवं जैसलमेर के पूर्व विधायक गोरधन कल्ला के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर सभी कार्यकर्ताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में भूमेश्वरनाथ व्यास, रामकिशोर जाखड़, वीना माथुर, कमलेश, करण सिंह परिहार व जयपाल सिंह चंपावत की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। **–डॉ. भावेन्द्र शरद जैन**

विनोबा जयंती मनायी गयी

विनोबा जयंती पर मिर्जापुर में आयोजित 'विनोबा एवं ग्रामस्वराज्य' विषयक संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए 'क्रेडा' के सचिव शमशाद भाई ने कहा कि विनोबा जी ने सदैव सत्य, अहिंसा और करुणा को आत्मसात करने एवं परदुःख के हरण के लिए हर संभव प्रयास करने की प्रेरणा दी।

सर्वोदय ग्राम स्वराज्य समिति के मंत्री विनोद भाई ने कहा कि देश की आजादी के लिए बापू के नेतृत्व में जब सत्याग्रह का पहला बिगुल फूंका गया तो विनोबा जी सत्याग्रह के लिए सबकुछ छोड़कर बापू के साथ हो लिये। बापू ने उनके देशप्रेम को देखते हुए उन्हें 'प्रथम सत्याग्रही' का खिताब दिया और ग्रामस्वराज के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। सुश्री शमीम बानो ने कहा कि आश्रम की दैनिक गतिविधियों में विनोबा जी के आदर्शों की छाया दिखती थी।

कार्यक्रम में बोलते हुए मनोज कुमार पाण्डेय ने कहा कि ग्राम स्वराज्य के लिए काम करने हेतु विनोबा जी के आदर्शों को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में स्थापित करने का प्रयास करें। नूरूल इस्लाम ने सर्वधर्म समभाव की बात को आगे बढ़ाने की बात कही, वहीं रमेश बहादुर सिंह ने हर गांव में ग्रामस्वराज्य समितियां स्थापित करने की बात की। कार्यक्रम में मुन्नीलाल अग्रहरि ने अपने विचार रखते हुए कहा कि जिले में विनोबा जयंती का यह इकलौता कार्यक्रम है, जो विनोबा जी के आदर्शों को प्रचारित प्रसारित करता है। अंत में संस्था के मंत्री विनोद भाई ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। **–विनोद भाई, मंत्री**

विनोबा सच्चे समाज सुधारक थे

11 सितम्बर को प्रसिद्ध समाजवादी व जिला उन्नाव सर्वोदय मण्डल के पूर्व अध्यक्ष रामशंकर भाई की अध्यक्षता में संत विनोबा भावे की जयंती मनायी गयी। इस मौके पर उपस्थित वक्ताओं ने विनोबा जी के भूदान आंदोलन की चर्चा करते हुए उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस मौके पर प्रदेश समाजवादी पार्टी की महिला प्रकोष्ठ की मंत्री व पूर्व सांसद दीपक कुमार की पत्नी मनीषा दीपक ने विनोबा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि विनोबा जी एक आदर्श संत व एक समाज सुधारक थे। उन्होंने गांधी जी की मृत्यु के बाद उनके आदर्शों के लिए सही मायनों में संघर्ष किया। इस मौके पर कृष्णपाल सिंह यादव ने बच्चों तथा युवकों से विनोबा जी के समतावादी सिद्धांतों पर चलने का आवाहन किया। जन स्वाध्याय अभियान समिति के प्रदेश अध्यक्ष रघुराज सिंह मगन ने विनोबा जी के व्यतित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विनोबा जी वास्तविक संत थे। जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष नसीर भाई ने विनोबा जी को एक धर्म निरपेक्ष समाज सुधारक की संज्ञा देते हुए उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस मौके पर सर्वोदय मण्डल के जिला महामंत्री संजीव श्रीवास्तव, मंत्री अखिलेश तिवारी, मजहर हुसैन, अनुपम सिंह, संजय जाससवाल, कृष्ण कुमार मिश्रा, विद्यालय के प्रबन्धक व सर्वोदय मण्डल के जिला उपाध्यक्ष रामसजीवन, आरके निगम आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। ❑

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

कविताएं

तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर

–हरिवंशराय बच्चन

तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर;
बोले, वह साथ चले
जो अपना दाहे घर;

तुमने था अपना पहले
भस्मीभूत किया,
फिर ऐसा नेता
देश कभी क्या पाएगा?

फिर तुमने अपने हाथों से ही अपना सर
कर अलग देह से, रक्खा
उसको धरती पर,

फिर उसके ऊपर तुमने अपना पाँव दिया
यह कठिन साधना देख कँपे धरती-
अंबर; है कोई जो
फिर ऐसी राह बनाएगा?

इस कठिन पंथ पर
चलना था आसान नहीं,
हम चले तुम्हारे साथ,
कभी अभिमान नहीं,

था बापू, तुमने हमें गोद में उठा लिया,
यह आने वाला
दिन सबको बतलाएगा।

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियों के बाद कहीं
फिर पाएगा,

पर जिन आदर्शों को तुम लेकर तुम
जिए-मरे, कितना उनको
कल का भारत अपनाएगा?

बाएँ था सागर औ' दाएँ था दावानल,
तुम चले बीच दोनों के, साधक,
सम्हल-सम्हल, तुम खड्गधार-सा
पंथ प्रेम का छोड़ गए,
लेकिन उस पर
पाँवों को कौन बढ़ाएगा?

जो पहन चुनौती पशुता को
दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती
ली थी तुमने,

तुम मानवता का महाकवच तो
छोड़ गए,
लेकिन उसके
बोझे को कौन उठाएगा?

शासन-सम्राट डरे
जिसकी टंकारों से,
घबराई फिरकेवारी जिसके वारों से,

तुम सत्य-अहिंसा का अजगव तो
छोड़ गए,
लेकिन उस पर
प्रत्यंचा कौन चढ़एगा?

संसार पूजता जिन्हें तिलक

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

संसार पूजता जिन्हें तिलक,
रोली, फूलों के हारों से,
मैं उन्हें पूजता आया हूँ
बापू! अब तक अंगारों से

अंगार, विभूषण यह उनका
विद्युत पीकर जो आते हैं
ऊँघती शिखाओं की लौ में
चेतना नई भर जाते हैं .

उनका किरीट जो भंग हुआ
करते प्रचंड हुंकारों से
रोशनी छिटकती है जग में
जिनके शोणित की धारों से.

झेलते वह्नि के वारों को
जो तेजस्वी बन वह्नि प्रखर
सहते ही नहीं दिया करते
विष का प्रचंड विष से उत्तर.

अंगार हार उनका, जिनकी
सुन हाँक समय रुक जाता है
आदेश जिधर का देते हैं
इतिहास उधर झुक जाता है

अंगार हार उनका कि मृत्यु ही
जिनकी आग उगलती है
सदियों तक जिनकी सही
हवा के वक्षस्थल पर जलती है.

पर तू इन सबसे परे; देख
तुझको अंगार लजाते हैं,
मेरे उद्वेलित-जलित गीत
सामने नहीं हो पाते हैं.

तू कालोदधि का महास्तम्भ,
आत्मा के नभ का तुंग केतु.
बापू! तू मर्त्य, अमर्त्य, स्वर्ग,
पृथ्वी, भू, नभ का महा सेतु.

तेरा विराट यह रूप
कल्पना पट पर नहीं समाता है.
जितना कुछ कहूँ मगर,
कहने को शेष बहुत रह जाता है.

लज्जित मेरे अंगार;
तिलक माला भी यदि ले आऊँ मैं.
किस भांति उठूँ इतना ऊपर?
मस्तक कैसे छू पाँऊं मैं.

ग्रीवा तक हाथ न जा सकते,
उँगलियाँ न छू सकती ललाट.
वामन की पूजा किस प्रकार,
पहुँचे तुम तक मानव, विराट!

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।